मेवै रा रूख ?

राजस्थानी उपन्यास

मेवै रा रूंख ?

अन्नाराम 'सुदामा'

धरती प्रकाशन
गंगाशहर बीकानेर

मोल पन्द्र रिपिया / पेली संस्करण १९७७ / आवरण श्री सन्नू/
प्रकाशक धरती प्रकाशन, गंगाशहर, बीकानेर / मुद्रक माहेश्वरी
प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर / आवरण मुद्रण नेशनल आर्ट प्रेस, बीकानेर

MEVE RA RUNKH ? (Novel) ANNA RAM SUDAMA/Price
Rs 15-00

'सुगना, थावरो देखां, चिलम भडका'र वैगो सो बारै, सूरज निकळग्यो है भलो भातो धाव बीं सूं पैला पैलां एक पांथ पूरी करणी है आपान, सिनाथ (सिवनाथ) थापर काकै रै बेटै भाई नै कयो।

'थायो ही," चिलम भडकावत वण उथळो दियो।

'रेत सावळ नाखी ऊपर, थावैंनी कोई चिणख उड'र "

'नहीं नहीं आ थोडी ही हुव ?"

"हुवण न तो रैवण दे तू आगैं थाग हुगो, आ तो नहीं हुई ही थाछी, कसिया झूंपडी मे ही खडा कियोडा है भलो।"

"ठा है।"

कांधां कसिया माथा पर रतिया गमछा उघाडा थर कोछा टाग्यां दोनू भाई निनाण खातर टुरग्या, जवान मोरच पर जांवता हुवै ज्यू।

सुगना ताव थाव तो चिलमडी न छोड फोटो करैनी धुवें सू किसो पेट भरी नै गैला आ खुराक थोडी ही है आदमी री।

"चिलम थर चुगली मू लागी माडी ही है हू जाणू घणी" थोडो रुक'र भळे बोल्यो 'बाबो जावता जावता था दे'र गया है लाड में रोज भर भर ठेंवतो बान हू ही मोभय्यो पण अबै थारै नही जची तो थान सू ही छोडी ई ठीकरी न काई काढणी है ई काट मे किसो डीम मांजीजै है ई सू ?"

'थोर तो काई है रे कन्नेई झूंपडती घुसगी तो, थापां नै हीं दोरी है, आपणो तो माल गोदाम ही थो है।"

झूंपडी अर काई झूंपडो डील सू ऊपा थोडा ही है, माडी जिकी माडी ही माडी।"

बात करता करता, केर सू सासा मळगा, डरी में पूगग्या घर भापर घोपार में लागग्या। सिनाय बरस पतीसेक रो घर सुगनो कोई तीस र भाम पास। है न्यारा न्यारा, खेती साग ही कर लेत है भाछो। सिनाय है तो मैंट्रिक ही पण भणाई सू बीरी गुणाई जादा है।

खेत में धान चोर न सू स'र मठ प न तांई, पण तिसवारी करतो बो मळसाईज ग्यो घर मांय मांय कोई कोई तुग्गो फुल्सीज'र जमीं र चिप ही। सिनाय धान नैं जियां हीं उदास घर तिसायो देख्यो आंख्यां र रस्त एक गैरी उदासी बींरी भाखो चेतना में ऊतरगी। जियां जियां कसियो चाल हो बियां ही बीरो मन। सोच हो 'पांच सात दिन जे भी छाटा छिडको नहीं हुयो तो तुग्गी सगळी सीज र रेत साग रळ लेख लागसी घर भापा हाथ फडका र धापण घरे घरे हो नही काईं ठा क्ठ ?' भा सोचतां हीं एक भणमावती पीड बींर रू रू में ब्यापगी। पांच सात मण दाणा धूड मे सिडाणा हा, मिडा दिया। फेर सूरज सामों दस्यो, निकळता ही किरा तकारी। पून ब द घर तिडकी नर तर बधत प्रोग सी ताती, भव घडी हो मता हुई है खोरतां पसीन ग रीगा भवार हो चालू हुग्या भक पूरो काढनी। भाडग रा भासार है बधती पोड घर उदासी न जाणू एकर कीं बिसराम मिलग्यो। बाव हुथ कानो न्हेंयो एक कलिय री लम्बी छांयां में रमती चिडकल्या धूड में हाव ही, बींरो होलता बिस्वास भौर जमग्यो एकर घर घर एक थिरता मूतिमन्त हुगी।

दिस्टी सामन गई ठेठ-पचास पावडा खेत री सींव ताईं बोल्यो सुगना, हे ब देख दो तीन डोंगरा बड खेत में घणी मर घाग मठो ठोकण त्यार रमी, सामतां न मौत पड, दौड देखां' घर बो कसियै समेत ही दोडयो। कसिय री ऊधी सू घी मत न्हे लिए वठ ही कोई गवतरी र भलो दौडत न बीन भळे सुणीज्यो। कह र पाछो ही वो कसियो चलावण लागग्यो। कसियो चलावतो चलावतो भापर मत ही बोल्यो डांगरा किसा टिकण द सोरैं सास काई दूर में बाडतो भोर करणी' घर कसियो चाल हो खायो खायो। हाथ इसा सध्योड़ा क कसिय री धार न भाडो टेढो करतो बो धान र चिपाचिप भर साग ऊग निनाण री जड ही छेड करतो धान री भळ रू ही छांडो हुव किसी पोल पडी है। घडी दो ढाई पछ निनाण कियो हुसी सामन मा घर टाबर भावता दीस्या-भातो ले र। भर घ ो हाथ और चला र भूपनी कानी गया परा दोनू भाई।

खारिय पे रोच्या, तडवणोडो छाछ पाँच सात गाठ कादा री भर एक।

धीरडो मे थोडा लूण मिरच । मा बोली, ' गई महीनै मास म जे रोडतो थ्यायगा तो थाछ रावडी घणाऊ खाया, नहीं जितै फोडो हो है । थानै न हीं वाळन जोगा नै कांई ठा कांई मरी खाई है म स ढाई रिपियां कीलो दियां है थन बांणियै ।

' ढाई रिपिया !"

' खाई हू नी व ही भळै उडता उडता ।"

"इसो कांई नाक झर हो'बा बिना लूण मिरच ही सही, आट रा बेटा हा, एकर तो पाणी मैं घलो'र ही जीम लेंवता ।"

' बेटा मिरच किसी सस्ती पड दस बार रिपिया कीलो कीं गुड कीं कचरो पूस झर कीं कमती कूटर्या पछ रिपिय में चोखी चटणी एक हीं हुवै । कांदा रा च्यार छू तका साग टुकडो गळै मोरो ऊतरसी ।"

बाप ही आयग्यो लार रो लार काथ कसियो उघाडो भर सिर पर मटमलो भर खुस्योडो सो गमछियो बरस साठेक रो मोळोसी दाडती दासरो मोछो ही पण लिलाड री लीका मे जीवण रा अनुभी लम्बो भर निलरयोडो ।

बात की डोकर र कानां मे ही पडसी बोल्यो, ' ो रिपिया तो भवार सहर मैं है भादा, भर ढाई कीलो हा जेठ मैं । थन बाणियै, एक लोड पूरो, ले'र नाख दियो एक साळ मैं तीन सू कम कांई पडया हुसी बींर, ो भर ढाई मैं सै काढ दिया गरीब भाण्मी भाई तो बायलै भर कांई ेल्ल, एझो टाकडो ोई मा पडे तो बींरो सास निकळनो सोरो एढो निकळनो दोरो ।"

सिनाय जीमतो जीमतो हा बोल्यो रिपियै रा छव सात बट तो ही थन जिसै न धाए की भावती फेर हा उडता ही तोलसी । इसो ही ल्ळो राज लाग्यो मन दूकानदार बापा रै, सामो हीं का जोवती ।"

भरे बेटा चोर चोर स मौसियाई भाई राज है कठ मलोदा म य ऊतरयोडा है भोठ थो थारी सेवा करस्यां भरे सेवा थे थारी भर थार लुगाई टाबरा री करता म्हारी किया करस्यो सेवा करण आळी रात हीं थारी मावां थांन जणती तो धाटो ही क्यारो, भाज ताई भकास र पगोथिया को लता देवतानी पे जासी कोई भागण वावडो ई धरती रो उभो आसी की दिन । सेवा नै जावण ो, भिणिया भोस'र मारो नहा तो हो चोखो, थारा गुण माना—"मा र तो खावण दो टुकडो ।"

डोकर छांया पड़ी सोटड़ी उरियां सिरका'र थूक धड़ाई, दो गुटका ले'र बोल्यो, 'पाणो सदा जिसो ठडो को साग्योनी भाज, बिरखा नहीं हु हुणी चाईज। सुण ता म्हा ही राखी है—

'मटकी में पाणी गरम, चिड़िया न्हाव धूड़।
ई हा ले कीडो चड़ तो बिरखा भरपूर॥'

कनै बठै, जीमतै सिनाथ नै, टम री भा बात इसी लागी जाणू बींरी भात्मा हीं बाप रै कठा सू बोली है। डोकरो वसियो ले'र निनाण खोरण टुरग्यो। सिनाथ र जी में हो कै बाप नै सुणाऊ सुगन भाज चिलम छोडणी है' फेर सोच्यो लार सू हेलो कुण मारसी दो घडी पछ ही सही। दोनां भायां डोढ एक रोटड़ी मसो चिगळी हुवली एक रोटी छाछ में चूरं हा का परियां भावती सू एक जीव रो हरडाट सुणीज्यो भर दोनू हा ज्यू ही थाळी छोड'र भाग्या भांगळयां ही को चाटीनी, ऊपरला दांत ऊपर भर नीचला नीच भायू णी सींव री खाई में जा र पेट तणा पडग्या दस मिट ताईं सिर ही ऊंचो को कियोनी। लुगाया दोनू झूपडी में बडगी डण पाछो ही धिरायो। बाप डोकरी भर दो पाता वरम दस दसेक रा बारै ऊभा भवाज कानी झाक हा। परियां एक मोटर भावती दीसी गांव कानी। रिस्क टळगी जद डोकरो गयो-खाई कन जा र हेलो मारयो, सिनाथिया भावो रे' जद व निश्ळया।

उठ'र डेर भाया रोटड़ी खाई ईनै बीनै बाको फाडता फाडता।

डोकरो बोल्यो 'काई टम भाई है भर कोई भो तोफो चाल्यो है, कीनै हीं जीवण देयसी का नही। साळा इसा गू गा हु गेडा है कै कोई भाठ रो ठा न को साठ रो। रावतिय मेघवाळ न बाढ'र बेकार कर दियो म्हार सू पन्दर ल्गि मोटो है। प्रभु थाळै पोत न—बाग्डो गुतर रो भाद ले र गयो हो सहर, एक सिपाईड पोटा'र बढा दियो।'

बीरी तो सगाई हुई ही लार स ?'' सुगन कयो

'बेईमानां ज्याव रो फोडो ही मेग दियो डण हुरस कोड सू ब्याव करतो कूक'र रयग्या बापडा—हुणी न हिरावडो कुण बताव रे भाई ?''

सुणी है बाया रोडी गांव में लुगाई भर मोट्यार भाडवड करसो, डाग अर मला ले'र राज री एक जीप भागै ऊभग्या, बोल्या मारस्यां भर मरस्यां जे कण ही हाथ लगा लियो म्हार तो। जीपडो सागो पगा ही दौडगी, मुड'र पाछी भाज ताईं को भाईनी।''

"मौत र छेड फतै लेवणिया किसा है, अर भळै राज सूं थोडो ही सकीज, हूं सगळी रत उळटचा तो राज न मुश्कल ही है पण मा कद हुवै वैगीसी। मैं तो आपरै किया न मापे ही पूगसी मोडा वैगा जाणी, म्हो मरीजणु माळो है मवै तो—म्रनीत री ऊमर घणी लम्बी को हुवनी।" डोकरो भळै टुरग्यो निनाण कानी मर मैं माई आई दोनूं एक खेरडी री गैरी छांयां कानी–पांच मिट म'न पौढावण न।

माडा हुया ही हा, पूरो पसवाडो ही को फोरयोनी, का'ही कोटवाळ मावतो दीस्यो। सिनाय बठो हुग्यो। बोल्यो, 'माव कोटवाल, सुणा गांव री गल्ला ?"

लम्बो सास ले'र बैठतो बोल्यो, "गाव री गल थारै सूं किसी छांनी है, जजमान।'

"हूं तो मवार दस दिन हुग्या, गांव ही को गयोनी, मा रोही भली मर म्हे दोनूं।"

"जद ही पच्चीस तीस हळ री निनाण काढ लियो, नु वों पइसो ही को लगायोनी, काम री तो मसीन हो ये दोनूं, म्हारो बो च्यार हळ री टुकडो ही ऊधें माथे पडयो है।"

"खैर तनै तो ऊमर ही मावगी पिचपन छप्पन री, है ही खासो यावल, पण छोरो है, सुणाई है मोटियार जवान बीर।" मा कह्'र सिनाय जाणू बीर रुवयोड मांसुवां मामला तीणा खोल दिया हुव। बो बठो बठो सजळ हुग्यो। टोपा गालां पर हुता ठोडी री दाडी में मा'र मदीठ हुग्या। एक मिट डो की को बोल्योनी।

,'क्यों कान्हा म्हारो काल्ह है तू, म्हार सारू कोई काम है तो भुळा, मा कायरी किंयां माई थार ?'

"जजमान ये म्हारा हो, थारै सूं भाग ही मैं केई दफ दुख सुख रो करी है म्हारी कोटवाळी मरी जद ही ये म्हारी पूरी मदत करी, गुण तो एकर ही हुवै मिनख रो कोई मान तो।"

"हां तू कीं कह तो सरी ?"

'छोर रै मा रांडरतो माडो मायगी, नातो कर'र खराब हुग्यो, पइसं सूं ही मळेट हुग्यो मर मानसं सूं और गयो, म्हारो थाकेलो मो ही है।"

"थारी पार नहीं पड तो, दो रोटडी आपणै अठै सू लेजाया कर।"

"बात रोटी री को है मी जजमान, बात है, लुगावडो है परल पार। बींनै सावण अर भतर फलेल चाईज। आ तो काई सेठाणी है, सेठ कीन हीं हाथ रो मल ही को दनी, ईन तो घणो ही दूठै। कान पापी है जजमान, सुणु जद काया धणी ही सीजे, पण जगत री जीभ थोडी ही पकडीज। छोरी पाच पाव सात सात दिन रूठन न आव परो। छोरो अर छोरी है घमली रा, ब मनै सेक, टुकडो सो मीत का नहीं हू तो लाठी अर भींत बिचाळ आयोडो हू—कीन आऊ बतावो ?"

'लुगावडो ही हाथ हिलावतो है ली कीं तो ?"

'सेठां र पोठिया थापन बासळ बारन अर बेठ ही पेट भराई करल मोडी बणी मन म आव जद आव गोला रा टींगर बई ईन बांन घर कानी झाका घालै लोह ही छोरो हुव तो कऊ ही कीन आपरी सायळ उघाडचा आप ही लाज मरू धणी ही एक चढ अर एक ऊतरै पण बळ विना बुद्धि बापडी है।"

'तो छार न समझाऊ क्यैई ?"

'ना मो, बी राड र मैं रती हुव तो घाटा ही क्यारा गुटको ले'र गोला जिसो ही बो है, एक रती बिना पाव रती है यो।"

"की तो दुनिया है रे धिगाणा हीं उठा लडी कर।'

'नहीं माईता सूई रो मूमळ तो खैर हुण मक, पण सूई ही नहीं हुव जन ?"

'हा भा तो है ई अबार ?'

सेतडो देख'र आऊ कदास ो मण काट करम में लिखो हुव तो, थारो मन देख्यो जद दो मिंट दुख छांट लियो थार आग, नहो जद हू तो इसो बात नै जीभ प ही को चढण दू नी।"

सिनाथ बींर चर सामो एकर गौर सू न्देख्यो बींन सामो गरीब डोकर री आख्या म ऊ चो आंवती पीड री तस्वीर अर चर रै सळा मे बीन फोडा घालती बेजा परेमानी। बात रो रुख फोर'र बो बोल्यो, 'कोटवाळ, एक ओपडी गई दीस ही गांव कानी ?"

"हाँ माईतां, भूल ही ग्यो हूँ तो थांन कणो—गाव में आज थाणो आयो है।"

'कियां रे ?"

'पीरू गयो कुम्भार छाणा रो गधियो ले'र आवै हो रोही सू । सतान सिंग लकड़ती नियां गोरव कने ही मिलग्यो । साळा गेडा, म्हार खेत सू छाणा लाव घर मटकडी मांगा जद भाख हो को उघाडनी खेत थार बाप रो है, छासल तो म्हे भरां घर खावकी तू खाव ने टिल्लो'र बोरियो पटक दियो भर दो टेकी भ्रोळाय री गुद्दी में, रोवतो बापडो घरे आयग्यो । आदमी भेळा हुग्या बीरै घर आग राणोराण।"

'फेर ?"

'फेर दो च्यार पाखरिया बींन थाणे लेयग्या रपोट मडा'र पाछा आयग्या । लिखाया पछ थाणो तो आव ही । थाणदार रा केई कमाऊ बेटा है गांव में।'

'आज फेर ?"

'एकर तो घणखरा में डूमी हुई, मत पूछो । गुवाड मे किता हो सैतान सिंग अर जोरावरसिंग खडा हा । जीपरो हुरडाट सुण्यो जद, कण ही कह दियो मसबन्दी भाळा आया है जिका रा मू ढा जीन हा ब बीनै ही भाग छूटा, गवाड मे मिनख रो बचियो ही को रैयोनी मळे।

'सिनाथ ही कैऊ हो म्हार म तो आप इसी ही बीती मवार, पण, काठी ताईं ला र गिटग्यो बात नै पाछी ही । पाणी पी'र कोटवाळ टुरग्यो ।

कतिया ल'र दानू माई काम में लागग्या, छोरा खोड में बळध अर रोडती भाडा ऊभा हा । परियां लुगाया ही ओरै ही । मा आई बोली "ल भई हू तो गांव जाऊँ, छोरयां एकली है ।,

'आज इत्तो वैगी ही, कियां है मूळकी रे ?" सिनाथ पूछ्यो ।

'आ तो भई कांई ठा चेतरै चढ़मी का नही, थांल्यां पोठो अर घर पर सून रो अँकार ही को नीमनी, बारह बरसां री बेग है चुसगो सफाही । आज मगळी न मळे चढग्यो ताव । जाऊ मभाळ तो मगी । तू ?"

"हूँ ही आऊ कास तांई, निनाणियो पूरो कर'र।"

"रामदुवार माळो मैंत बेमार हो रे, दरसण करण नै सोग-बाग भाव जाव हा ?"

"घणो बेमार है ?"

"सुणी तो है, पछ कीं ठानी।"

"तो जद कास नहीं श्राज ही श्राऊ मिलणा जरूरी है बी सू ।"

सिनाथ र मनमें एकर हळकी सी एक चिन्ता उठी, पण पाणी र बुल बुलसी पाछो ही बैठगी छिण भर में । 'श्राग री श्राग सोचस्या पैलां कांइयो क्यों।" सोच'र पाछो ही बो भापरै श्रौपार में जुटग्यो।

☐ ☐

दिन भर रो थकब्योडो भर गु मी दुनिया रै दान्त सु नाराज हुयोडो सूरज, होळै होळ बादळां रै बिछावणा में बड'र दीसणा बन्द हुयो, जावतो जावतो भापरी नाराजगी जाणु भायु री भाभ पर छोडग्यो हुवै ई जातर ही बो (भाभो) भवार एक नैरी भोल म डूब्योडो सो लागै हो। हवा बन्द ही भर ऊमस जादा। गांव री रोही मे दूर दूर ताई ऊभा खेत बिरखा रा भडीक मे मौन भर उदास हा। भाखी रोही पर उतरतो भधेरो फुरती पर हो। भापर माळा कानी उडती चिडकल्या री उतावळ भरी चीचाट भर कागला री कांव कांव साग रळ र ही गुण घरम सू यारा "यारा ही हा। गांव कानी धिरत एवड भर बळव गाडां री कोई कोई सुरीली टोकरी काना रै रस्त चेतना में उतरती राग री सिस्टी माड ही पण सिनाथ भर सुगनो डांगरा रा कियोडा दो एक गळना ठीक करण म लाग्योडा हा। बातावरण र मून न तोडतो सुगनो भचाणचको सो बोल्यो "भाई थे गाव जाऊ हा नी काम को छोडानी भवै ?"

'भरे हां आणों है नी।'

बादळवाई रात है भधेरो बध आवो परा जळनी सी भैरू भाग री ज्यांत राख्या।'

ज्यात तो लादेसर दीरर्यां राखीज बिना दीस्या कियां राखीज भर भापरा ज्यात सू ही जे कोई जियै तो बैगो सो मरै कुण ? कोस भर भू है भबार जा बडस्यू । तू मचली पर नहीं सो'र डू च पर ही सोए मलो छाटा भावै तो

तिरपाळ नांख लिए, झूंपडी मे म्राडो मत हुए, पान रो डर है–श्र मूचो है नी ।"

"ठीक है।"

सिनाथ टुरग्यो । बादळां रै कारण भ्र धेरो काजळ सो गैरीजे हो । भादवां सुदी चौथ ही की चाद तो भ्रकास मे ही ही, पण बीर थारा मुकाम री सीध ही सो को वधै ही नी भ्रबार, पण रस्ता बीर पगां लाग्योडो हो, ईं खातर पग श्रापरी सज भ्रादत म वध्या मत्तं हो लगसर चालै हा । पावडा सौ सवासक बो चाल्यो हुसी, भागरो एक बळध गाडियो मिलग्यो टोकरी बाजतो । "कुण हुसी ?" सिनाथ पूछयो ।

'भ्रो तो हू पीथियो नायक, कुण सिनाथ राम ?"

' हां एक तो सागी हू ।"

"भ्रावो, बठो गाडै पर ।'

दोनू साईना सा ही हा, सिनाथ बोल्यो, 'नहीं रे, ईं सू तो उपाळो हूं बगो पूगस्यू , पाको बळध है, क्यो वापडै नकसरै न मारू ? '

'भ्र'धेरो है भ्रो, ईं खातर कयो है, करसी तो पाबू राठौड, बींरी आंख्यां चानणो है पण भ्रधवै ईं पर की निधडक रस्यो । भ्रावो बठो, आपरौ किसी उतावळ है, धडी दो धडी मोडा ही तो पूगस्यां, इत्ती ही तो बात है ।"

बठग्यो बो । गाड पर सीलो हो मण सवा मण, सिनाथ पूछयो, 'लीलो घरे ही ले जावै है का बेचै है कीन ही ?

' न बेचू भर न घरे ही ले जाऊ ।"

'भ्रा किया हूं को समझ्योनी ?"

"धनजी कनै सू रिपिया लियोडा है—खेती पेट पाचसेक, बो ब्याज को लेवनी भर हू ईं रा पइसा को लू ना ।"

' चिट्ठी लिखायोडी है ?"

"नही भ्रडाण सट, लुगायडली री टूम मेल राखी है ।"

'ब्याज कांई लेव ?"

"च्यार तो समझो ही ।"

"च्यार नहीं पांच सममस्सं, सो ही पचीस टूया तु मण खड तो रोज लाव ही है जे दो रिपिया बेच तो ही महीनै रा साठ सो हुवै हो है ।"

"कांई बताऊं ?"

मैं तो सुणी, थारे की देवा रावो हुयो, थाणौ आयो बताव ।"

बस गमलो गया गा'र कैया थाजो रै अठै गयो हो, थारै सू बब कांई छिपाऊं, भामी पर सुगावडो री दूजां बडाएँ मेल'र रिपिया लायो हूं पाठ सा रायो रै देवण नै—पर रिपिया तो नठा म्हारै जीवन सरच रा समझन, बोन मिटा र काढ्या है आज ।

'सामान ?"

' सेठ री हाट सू सुलवा'र दियो ।'

जीवन सरच मैं म्हान तो सैर नहीं लही, पर थाळ टींगरां न तो थसा थसो की, भाईडा रस्तो पळन पकड लियो, गवालेट कर'र इयां ही छोड दे'सी पर बिचारीज सी इसो कोमो, बो सास ही सु बो को हुवनी, बरा तीस दी तने था ?'

"सिरैज्य बर गुमान सिंघ ।'

' एक साडगोर बर दूसरो डाक्मोरो है ।"

"काल आणो है बांए भवाई हुसी ।"

' गवाई थाळा तम किसो सूको छोडसी आनी वण र जासी थारै सागै ।'

'तो कांई करतो, इयां तो मैं बसण ही को दनी भोला ।"

' पछ थारै बारकर बिसो पीरो सुर करदेसी थांएा भाळा, छेकड ब राजीपो ही तो करवासी बो काम आपां हीं कर सैंवता, आपएा घम री अथवै कीं मामळ ही पडसी भमल नै ।"

सिनाथ बीर पर सामो देख्यो, गई-योडो भर एक दुबिधा वी पर हावी हुयोडी ही । 'खैर, जा गबार तो, पेर मिलस्यां,' कह'र सिनाथ भामीन टुरग्यो । सोचे हो "कोई लडो याव राजीपो करो घ'ने री बांवी ओर नहीं तो जीमण रो सामान यो ई री हाट सू ही उठै । कीर ही भर घाव ध्याव हुव, काळ पड जमानो हुव, घाव बाढ घाव ई र पाछाण नीच तो थाणा ही पड ।" पैर सोच्यो मोड मैं मोडो, नही सरयो पाछा ही थाला, दिनूगै बात, मळै विचार भायो, बठ किसी बीनण्यां बठी है जिको काचळ मानसी थापा न देत'र, मोडा हुवैला दो च्यार का कोई पाळपाडो टुकडेल बठो मरतो है लो । इयां मरतो मरतो पूगग्यो रामद्वार र बारए सामो । रामद्वार री यारली बसी जम ही निमघी निमघी । बारए सू कोई सीनेक पांवडा उरियां

घोळी धोती पैरयां एक लुगाई साथ बीरै एक छोरो, पन्दर सोळ बरस सू ऊचो नहीं हुणो चाईजै, लुगाई रै हाथ में एक गांठडी, छोरै कन एक पेटी बीरै कनकर ग्रधर से निकळग्या। लुगाई गे मू ढक्योडो हो। बण जा'र बारए न धक्को दियो होळै सी।

"कुण हुई (हुमी), बो बारए आग्रा" बीन सुणीज्यो। ध्यान श्रायो बीनै, घरे मूळ बारणो तो बीन है श्रा तो सार्या री सुविधा खातर है, बो च्यार पांवडा श्रौर श्रागीनै गयो। बरस सित्तरेक रै एक साव बारणों खोल्यो। न बीन घणी सूझै श्राळ श्रर न श्रबार बो दो बरसां सू घणो बार टुर फिरै हो, ग्रधमाणस सो आपरो छोटको काठ दसो श्रादमीडो। होळ स पूछ्या सिनाय 'मैंतजी म्हाराज रै मिथा है, दरसण करतो।"

"बेचेत पडिया है रामजी र, आंख ही नही खोल घडी आध घडी सू कदेई बोल, दरसण करन न श्राही वेळा मळी थांन, घरे जावो न नींद भेळा हुवोनी।' बारणो बन्द हुग्यो।

सिनाय, घणी उळझाड मे पडनो ठीक को समझ्योनी लागी पगा ही टुरग्यो पाछो।

पांवडा दो एक श्रागीन जा'र, काई जची बीर बो पाछो ही मुडग्यो श्रर श्रा र बारए मन होळै स ठमग्यो। भीत नै हुय बण सुण्यो, 'सता कुण हो?'

"कांई ठा हेठो, श्रो तो नी पूछियो।"

'पूछणो चाईजै हो श्र र, एकलपो ही हो कांई ?"

'हुणो तो एकलपो ही चाईज, बीजो लागियो नीं कोई।"

फेर बोलारो बन्द। मिट दो एक श्रौर ठर'र बो मळ टुरग्यो पाछो ही। सोपो लागीडो पडग्यो हो। गांव रै मानख री चेतना धरती पर सूती गगा बगै ही बधीड़ दैखती। श्रांधा हुयोडा गुत्ता खासी लडता सुणीज हा।

बीर श्रागकर एक भींत सू कूद'र, एक कुत्ती लारै छव सात कुतिया मदान्ध, दो तीन खोराव, केई घोरखा बरता बाड रै एक मळत मांकर एक बाखळ में बडग्या, लडता लडता सो श्राया [illegible] हा, श्राग जा'र भळै महाभारत छड्डो कर लियो। कीं एक न नीच नांख'र पर्फडता लाग्या। घर धणी कोई बोलतो सुणीग्यो "ठरो बे रोयलू थांन, श्रघ घडी ही श्रांख मत मीचण देया थे, रीसां बळतै एक रै सो लठ्ठ री टेवदी दीसै ही, बास रै ऊपर कर श्रोक हो या। एक

अब बूढी अर लाचार कुत्तो, भींत को चढ सकयोनी, घडी घडी कोमीस कर अर पाछै पड हो। सिनाय सोचै हो, "काई नांव काढसी वापरो, पण कठ तोन्याा ईन तो अंवळाई खा'र ही बोनषी रो भूखो जासी बापा बनै हीं। आं बुरदमिया र बरस में दो महीनो हीं पांतो वावें मिनखां माळ दाईजे पूरो साल मिल मान तो अै आखो बसतो न अघर करल अर मा आप [illegible] सु साबतो कोई सुगन लिया हीं को लाधैनी।"

बो घरे आ'र चोकी पर पडग मांच पर उसराडो ही म्हांडो हुग्यो, पण माखया में बट कठ ? सोचै हो लुगाई था, घणजी री ब'न हुणी चाईज चांदा, बाळ बिधवा हुयोनी है सासर सू लाई बो भळोतळो भायां कन ही है, हुवती पताळीसेक र अडगड छोरो ई सागै, ई रो ही कोई भतीजो पतीजो हुणो चाईज इसी गूमी योडी ही है जिको इण मीक दूज न साथै लाव ही। मांडो, 'ऊमर पच्यो बैल की नाई मेळो कियो अर रुखाळी राखी सापग्राळ दाई–स्कूल रातर मागण गया तो ही को बी मीं काणी कोडी ही साथ हा न्हे तो भापर रस्तै आगै भाठा ही भाठा मेल्या बण तो भळेवण ले'र आ लम्बी हुई लागी मन सो। केई दफ देखी है मैं चादा न रामद्वारै में। सफेद झक धोती गोहुवो रग हाथ मे तुळछी री माळा, साधा री सेवा अर कथा वारता में भाग, ठीक बाही हुणी चाईज, मू ढो ढबयोडो हो मला ही हुवो, म्हारो तो को होनी।" सोच हो, पण पण मन बळग्यो भैत कानी और उठग्यो 'दवाई देव अर डोरा डांडा ही कर, बरस साठेक रो है। आ बरसा में सामो भारी पडग्यो, डावो हाथ थोडो पूज्या कर। विश्वास आपर वापरो ही को करैनी चाब्या रो भूमको का तो आप कन का बाई चादा रै हाथ में। काछ रो साचो ई जुग मैं हुवग री रीत ही किसी, तुळछी री कण्योडी 'रहु धाम सवारहि धाम जती' कूडी योडी ही करै रामद्वार री मायली भींता पर दोहा अर चोपाया मोटे अर मोवण आखरां [illegible] लिखवा राख्या है सभा रसायन हम करी, नहीं नाम सम कोय।" राम नाम की लूट है " सुनहु उमा ते लोग अभागी, हरि तजि होइ विषै अनुरागी । रामद्वार में ही ऊपर एक कमरो [illegible] पन्नो बीमें गद्द पर गलीचो बीं पर ढोलियो काच अर साज सजावट इसो क काठ में ही राम बापर। एकन्नै एकदो साधु सत ही आवना देखी कन्ने कदेई एकर एक चेलो राख्यो केई न्नि–मारवाड कानी सू आयोडो हो भट्टार बीस बरस रो हुवला महीनो सवा महीनो राख'र बिदा कर दियो, अोर आयो एक बो ही को सुवायोना इक्लखारियो मरै। काम अर दाम र लोभी न दूजी अवखाई कन सुवाव। मैंतबी री घणमरी राटी सठा र मठ [illegible] हो आव साधुडो कोई

भ्रायोडो हुव तो गांव घणो ही बडो है । इया रामद्वारे में मरणे परणे हुंती पोळी वापरती ही रव । भ्रापर मतै, भ्रो कीन ही मोरो ही को चलावै नी, पडी पडी वुम्रीजो, का वूफण भ्रावो वीं पर, चादा ही भला हो सलटावा वींने ब दा तो मजाल है हाथ ऊमर करदै–न्य्यो है केई दफे । 'है जिमो ठीक है' मन कयो, 'भ्रापरा किया पाप भोगसो भ्रापा थयो कोने ही मल निचोवो, छोडो,' भ्रर पसवाडा फोर लियो बण; कदास वीं भ्राम लागै तो ।

मन किसा मान र्स बन्ळनी चावै हो पण वो फमयोडी टीटण सो पाछो ही सागण दिस म भ्रावतो सामी सातण हो दू ढ हो । 'कांई ठा हेठा' भ्रो हेठा (सेठा) कुण हुणो चाईजै, जरूर धनो का लालच द ही हुणो चाईजै, कागद पत्र का कोई कीमिया चोज मळो करतो हुसी, चेतो है वीनें कीं, तो समझतो हुसी वीन पूछ र । म्हारो हक्को ही, पवरायत वीं कन ही पूछसी । पूगी भ्रापणी नीयत में किसो वेईमानी वस रिपिया होय मो भ्रापर नै दंणा है, मुश्कल तो भ्रा है क भ्रवार ब पार किंयां पडसी दिनूग भ्रापान दस भ्रादम्या मे जे कैयो भ्रव हू तो एक न्नि ही को राखू नी थारो हक्को लेजा भ्रर भ्राया कवा, सा भ्रजार वो को बणनी तो बात फूठरी को लागनी भ्रापणी पोजीसन जावै । रोड वेचणी पडसी वच देस्या? पण इण डोकरी कद मानसी, मूळ रो सुरखोज ही कै को जाण नी ठा लाग्या रोळो ही है ।

पसवाडो मळे फोरयो, विचार भ्रोर कीनें हीं चालू हुयो । समभण री, भ्रसली बात भ्रा है कै, भ्रवार री टम में, भ्राप कनै हुवै तो कीरी मदत करदेणी नहीं हुव तो उछाळ माटो करम मे नही लेणो, काई भ्रणसरयो भ्रावतो भ्रापणें, चिट्ठो मांड'र रिपिया दूसरै नै दिरावण खातर ? ई तक न का'र मन री एक दूजी धारा सबळ हुणी, 'काई जुलम कर दियो त, गरीब बामण हो, टीबी हुगी, थारो बाळग्रोटियो हो, छोरी हो परणावणु साव, सास निकळचा सू पाच मिट पैला बुलाळियो तन, भ्राख्या भरतो होळैं होळैं बोल्यो, 'घर में तन ठा ही है । लाफण रो पूर ही मसा पार पडसी, दो महीना न छोरी घोरिये चढै तो वीं सा फेर भ्रांख्या मरीनगो ग्रोजी र्द, भ्रासू पडता रया, दलतो रयो थारे कांन । एकर हाथ उठा'र छोरी सामो कियो, छोरो म्हडो ही वींरो हो भ्राख्या मरी बमबसीन भ्रांसू पड, इया ही लुगाई–उन वी वेळा कांई कणो चाईज वो कह दियो ■ जुगो थोडो हो खेल्यो है । जाट है धरती रो बेटो है–हठ री भ्रास राख, धरती राजी हुणो तो स बाता हुसी–इत्तो कायरी क्या लावें मन म ।''

दूधड चिन्ता में रात निकळगी, मायो की भारी हो। मास घड़ी हो'र घड़ी ही मुश्कल सू लागी हुसी। कोई कोई सो बुझतो तारो रह रह आभै में टिम टिमावै हो। आख्या खोली तो बीन आस पास रात रा निरास भर घायल कुत्ता कूकता सुणीज्या। भोर में राजा कण री बेळा, बारी किरळी बीन बडो सोभी भर कुसुम लागो—पांच सात गिडक तो बीर फळस आग ही लाग्या बीन। माच पर सूत सूत ही बां न एकर दिरकारया पण ब कद मानै ? छेकड, एक लकड़ली ले'र उठ्यो। बो काई दूर तांई काढ'र आयो बांनै दो एक लुगाया र मूंढ सुणीज्यो बीन मैंतजी म्हाराज तो धाम पधारग्या आज, बकुंठी कढसी। धिनाप सोच्यो, हुई जिकी ईस्वर री मरजी, चिपल दिन रा सेठ कनै चालस्यां, भळै बो कदेई तेग्यो भेज'र बुलाव ई सू कांई फायगो, पूछण म किसी दोसापति है।'

□ □

मैंतजी रातनै काई ठा किसी वेळा मरया पर रियां मरया, मा, का तो भगवान जाणै पर का बीं वेळा बो कन मौजूद हा बो पण, मैंतजी धाम पधारग्या बैकुंठी देखण चालो' आ बात सूरज ऊग्य सू पांच मिंट पछै ही गांव री समझदार घराना म सगळै फलगी नाई साथ बिना कठै ही तेडो करवायो।

धिनाप म्हाथो'र, आपरी बेमार काकी सू घर री हो कोई गुरबत कर हो। काकी मरपा पद्य हो, बींरै तोळो मातो बोळोमासो चिणपिण रैव हो है। श्याह में एकर, बीं गडबड हुई हो बीरै। मोमरो एक छोरो हुयो पबार बो धिनाप साईनी हुतो। महीना ढाई तीनेक रो हु'र, बो चालतो रयो। डाकण मैलियो बताव बीन। गांव में एक कुम्भारो हुया करती बरस साठेक री ही बीं वेळा। टोडी पर होठा पर बीर ठोडी पर सम्बी केसाटो हुया करती। डाळी स्याळी तिवारी जैवार आवती। बीनै आवती देख र घरां [illegible] लुगाया टाबर छव महीना र टाबरा नै ले र साळ पर कूपडा में बडज्यावती। काची ही बतावो एक दिन ब 'हू तो ही पाळीन गयोडी हुव बारी मा गायडो टोपटिय रो बीं करै ही स रै। भाग्याबोज हो तिवारी न मरा बटो ही, पाळणिये में सूत घोर में देख र पाछी ही उठगी घार तो बा रात ही बा बाडीनी—टूटफोड कूमतो, मुरदा'ज्यो दिसूग में।

सिनाथ र आ बात, बी वेळा भी कम ही समझ मे आई कै इत्ता लुगाई कदेई डाकरण हुया कर ठाकर न देख्या हीं वो चल बस, इयां तो बा कीनैं ही, जीवण ही को दैनी, बा तो रोज ही कीन न कीन तो देखती ही हुवली, गांव पछे खाली तो को हुयोनो ? बेमारी सू भजाण आदमी इसी ही अणघड बातां कर । याकी न बण घणो ही खोद'र पूछयो, पण बा बीन समझा को सकीनी । बा कुम्भारी जे जीवती हुती तो बीर जा मे ही क बीन पूछतो वो सावळ पण बा आपरी आणीन उठनी ससार सू सारस बरसां–रोज भर रोटी दोनां सू हीं दुखी ही बा । पछला डोढ दो बरस आंघापण मे बीत्या बीरा, आपरो खोटको ही सावळ को काढनो नी बीं सू । इत्तो ठा सिनाथ नैं जरूर लाग्यो कै बीरैं पांच सात, जिता टावर हुया बै स भडग्या एक एक कर'र । अबार वा गवाही ये * हुयोडी पडी है । बात रो निताार किया काढू ई रो बीज बीरी चेतना धरती मे दब'र ऊ डो उठायो, सुभाव री विरखा नैं अडीक ही वो ।

बीरो मामो हो, अबै तो सरीर खा'स हुयो बीरो । बीतराग भर एकल विचरण आळा स त हा ब । बां न एकदिन पूछयो सिनाथ–डाकरण र बार में । बा कयो 'डाकरण स्यारी कीं नहीं बेटा, डाकण आदमी री निजर ही हुवै, टावर-टीगर री कमी री एक गरी भूख जद की लुगाई री आत्मा मे ऊतर'र दोवडीज, बा ही डाकण बण'र मिनख रै ऊपत वू टै रो नुक्साण करै—भाळै बीमार भाळै धाई काळी निजर बज बा ई खातर बेटा, न आपरी आंख्यां राक्डी राखणी कदेई, भर बस पडतां न आपरी मुट्ठी ही । ई रो परणाम खोटो हुवै–साधु हुवो चाव घर बारी–सगळा न । मन भर हाथ री उदारता रो बो बीज, जाणू बी दिन सू ही, सिनाथ री चेतना मे ऊग र ऊचो आणो सुरू हुयो हो ।

बोवां रो दुख नाडा मे भर तो वो सरीर न दूबळो कर'र धाई ठा किसो रोग पदा करदै, ई खातर काकी रा बोवा सिनाथ चूंपतो, भर आपरी मा रा ही । साल नहा, चू'ध्या हुसी । बो काकी पर मा रो सो हुक समझ भर काकी बीन आपरो मोभी बेटो ही थरप राख्या है । अबार दो तीन दिन सू ताव आव है कानो न मर्लीरया । वो बोल्यो, निनाण तो करलियो काको, अबै तो जच'र विरखा हुजाव तो पोबारा पच्चीस है ।'

'लाडेसर कोठो मे ला'र घालदां जद जाणीज खालो विरखा सू हीं काई हुव, भोला नहीं बाज पून में सुभाव हुवै, घणो बातां चाईज ।"

---

* ये =संदहर

इतैं न बीर कानां में अवाज पडी सस री, झट ऊभी हुगी।

"क्यों काई हुयो ?"

"वैकुंटी आवै दीस, सस को सुणीज्योनी रान, दरसण तो करलू ।"

"ल हाथ झाल लू पडली कठ ही ।"

'नहीं रे, पेवटी सू एक खोपर री डोडी काढ'र लाए देखां' कह'र बा होळ होळै फळम आग जा'र ऊभगी। सिनाथ ही आयग्यो, काकी नैं खोपरो भला दियो। हरिकीरतन, ढोलक, जीस झालर अर सब री भेळी अवाजां सू ऊपर रह रह कदे कदेई रामदास जा म्हाराज री ज'सू गांव रो आभो गूंज हो। जुलूस सुरु हुग्यो, भीड़ तर तर बध ही। बो ही गळी रैं एक नुक्कड पर जा'र ऊभग्यो।

वकुंटी वडो जोरदार सजायोडो। च्यार आदम्यां ऊंचा राखी ही। मुकटी मैं मैंतजी बठा हा। नुवां कपडा, बढिया मलमल री भगवा साफो, मलमल रो चोळो, आपरो सागी चदमो लगायोडो, लिलाड मे केसर री गोळ टींको, ऊनी आसण पर बिराजमान, हाथ में नव मिणियां री तुळछी री एक मोरखो लारै सीताराम जी री एक किलण्डर। आगै एक गीताप्रेस री गुटका रामायण टिगटी पर जचायोडी अर धूपदानी में अगरबत्त्यां चेतन हुयोडी, बाता धरण मैं सुर्गा धत कर ही। लकडी री एक लम्बी हत्थी सो डोडी नीच दियोडो, डिग नहीं म्हाराज ईं वावलै सारू। लारै लुगायां, छोरा-छींपरा अर आगै पचासू आदमी, पांच पांच, सात सात मिट बाद कूद कूद'र काचो बदळ लोग-बो बीसू आग अर बो बीसू ।

धूळी अर घर म लार-बार आळी, घरां सू बार आ आ दरसण कर, केई बागळां पर खडी, केई बीनण्यां बाडा पर काए गू वटां में ऊभी अर गांव री बेट्यां भीड में रळ कीतन करै। घणा ही लोग नारेळ खोपरा अर पतासा चढावै हा। धनजी कदे कदेई रेजगी उछाळ [redacted] मुट्ठी भर'र। नायक मेघवाळ सैंसी अर अणसमझ टाबर चुगै हा। लुगयां बात करती सुणीजे ही बाई म तो जीवतां सू ही आछ्यो लाग, इसा तो जीवता ही को थोप हा नी।

सिनाथ री दिस्टी मैंतजी कानी गई जो भर र दो मिट देख्यो बण मैंतजी री लास न, फेर लुगायां कानी। एक लुगाई खीडर हुयोडी आग कोरनत बोले अर फेर पांच सात मिट ठर'र 'रामदासजी म्हाराज री ?' जै' सगळी भीड बोलता। देखता ही बण झट ओळखली हां, रात आळी ही आ लुगाई है चादा

बाई। जुलूस बध हो आगोनें—निकळग्यो गळगो, सिनाय बैठे ही खड़ो रैयो बाई ताळ, मन मथीजणो सुरू हुयो मायो भरीजग्यो विचारा सू ।

किसोक सजायो है ई नें, जीवत सू दो चंदा बेसी ही नहीं, साव झूठो। लास रें चस्मो लगायो है, कांई देखू है अब ओ देखण जोग दिनां में ही को देख्योनी घणा, जवानी में पण राखता ही चस्मो अण डाबर रो लगा लियो हो, मोटे मोट आखरां में ब्यारागळ छड सामो लिख्योड़ो बापर कमरे री भींतां पर 'रामनाम की लूट है ' 'अब सायत हो कांई बांच्यो हुव, सेवा रो सुख भर नाम री रासि लूटण न आयोड़ो, काम भर दाम र डोफां सू झूटोज झूटोज लूटीजग्यो, बो ही भळे रामद्वार में, ढाल भर तरवार कमर मे लटकती ही रही, लपोड म बसर है-बीरी या लास गूंगी दुनिया ढोयां फिर सजा'र।

मैं इंसको कियो ई न ओळखे रिपिया रो मस आदमी न कयो "मैंतजी बी गरीबणी रैनै टक रा दाणा ही निठे बापर पइसा है भरसू आपन, ब्याज री कीं मर करो।' बोल्यो, सिवाय औरा कनै सू ब्यार अर पांच साईं लेऊँ, थार सू दो रिपिया सईकड़ो।" हू काई बोल हो, सोच हो, बाई ई रै लार मागुडिया रोय, गयो है इत्तो ही को समझनी, मोर मदत कुवै में पड़ी, ब्यार रिपिया ब्याज रा ही को छोड सकनी रीस तो एकर इसी आई, धोळाय री दो थेपू । बीं कुमाणस री लास कांनी भाकण नै ही जी को करैनी। फेर सोच्यो, लास तो मान अपमान ॥ ऊंचो अर रागातीत है, ई सू ईसको ही किसो ?

फेर बीनें मयली दरोगी याद भाई-बीस साल ताईं रामद्वार न झड कायो ऐंठा बासण मांज्या कपड़ा धोया, ऊबरयोड़ो कोई टुकड़ो कदेई मला हीं खानियो हुव—दिन भर राम राम करती, हंस'र बोलती, मैंत री असली चेतना तो बीम ही। मोगियो हो बच्चो सो, पहायो कीं बिरसां म बोली गुरु म्हाराज आटो ही बठ राखू, कुत्ता बिल्ला को छोडनी, कीं भर करो । गुरु म्हाराज फरमायो, चींपां नांख'र ब्यार लोया नागसी दे नांस, ऊपर थोडो लढाई रो मुरड़ छीदो छोनै मुरका'र पांच सात दफ छिड़कस, चिपज्यासी लोयां र, कई बरस को ऊतरनी, पवका करा'र तन विलां बरस रसो है, हां बीनें तो विता बरस रैणा है, आपरो तो पट्टा लिखायाड़ो है हजार बरस रा। बण बापड़ी घादा बाई में अरड करी पण बाळी भळी न बोहाळी बा घेनी तो ई री ही। दरोगण मरगी हुती हा देसती में पर्क भर पत्थर न्याय रामद्वार री मैंत गयो-ढोलियो भर बीजळी छोट र बिरी ही गयी रो भार ले'र सिर प" दण हुयाो साव खाली।

दरोगण तो पाँच सात साल आपरै ओरिय में काढदिया हसतो मुळकती, III एक दिन मिटा में गई घोडियो कूग'र, अप घडी ही दोरो कुण हुव बींरै ।

एक नायण आई डोढ दो महीना रही ई बनै, फिर फिर श्रीमती घरा में । पुराणै दिनों सूं याव आव बताईज हो बींरो । एकर सासो झलोतळो ले'र विदा हुई । एक सोनारी रो ही ससकार हो, तीन साल पला हीं तो मरी है बा ।

कोदियै रो दार्णो ठाकुर द्वार बाळन में चढ, दो साल पलां अगरू बाणियो बीस मरी रा मटरिया ले'र गयो—पांच हजार रिपिया लिया तीन रिपिया सइकड में । ब्याज चढ्यो तीन महीनां रो बींन बुलायो गयो बो, साथ बो आपरा भाएला पावेला ले र, हू बठ ही तो हो बी वेळा । बाणिय कयो 'आपरा रिपिया लेवो सा, स 'याज मन म्हारी चीज समळावो । मैंतजी मटरिया ला'र धर दिया, एक कोथळिय मे ब च्योडा । बाणिय निजर नाखी'र सावळ देरया बान, बोल्यो 'हू कांई करू आंरो मन तो म्हारा चाईज ।" मोड रो मूं मोळो हुग्यो बोल्यो 'क्यों ?"

क्यों रो मन कांई ठा, थार सस आवै, कांईठा कींरा है ? पराई जिनस म्हार कांई काम री ?"

'नही भई थारा ही है भ , हू कूड थोडो ही बोलू ?"

'ये नही बोलो, तो म्हाराज कूड बोलण री मनै ही सोगन है, है तो थारै मठ ही देखो दे'र भूलग्या हो तो चेतै करो, 'कह'र बो खडो हुग्यो, उठतो उठतो, आ और कही न है म्हारी बाई रा, बा जासी काल सासर, सोधण री ताकीदी किया ।' मैंतजी रो काळजो ऊचो चढग्यो । सुनार न बुला र दिखाया य, बरा कयो म तो आठ दस रिपिया रा है—पालिस कियोडो पीतळ है । मैंतजी रो सास तो को निकळघोनी, बाकी क्रीं को रयोनी । आज रो घडो काल रो दिन मोडो कूक'र रयग्यो मांय रो माय ।

दवाई देवण जावतो, कठ ही, फीस पला, सुरू सुरू मे रिपियो पछै दो कर दिया । घर में पग देवतां ही बेमार मरग्यो तो ही फीस को छोडतो नी । पण धन फीमा सू भेळो को हुयोनी, बो हुयो डोरां डंडां सू । कूख बन्द करण रा नुसखा हा पेटेंट विधवांवां पूगतो लुको छिपी—नायण सुथारी अर सुनारी केई चेल्या ही दलालण । बा कन सू आवता पइसा माय रा माय । इयां हीं कींरो

हीकूल खोलण न दॅवतो डोरो धूड में लट्ठ लाग्यां खुलगी की रो ही तो चादी सालो साल सेवा मर चढापो। नहीं खुली तो पइसे रै डोरै रा पच्चीस तो सामी ही दीखै हा। कैई गरीबा रा खेत बिकवा दिया भाथ पइसां मे केया रो घन (ग्राम, भस, एवड भ्रोठारू)।

मिनाय न रह रह मसूमो भाव हो, देखो भ्रण चौपायां लिख राखी है ई बग गे– सुनहु उमा ते लोग अभागी, हरि तजि होहि विषय अनुरागी' भर ईसो अभागो घरती पर मळै कुण हुसी, पगां साम्योडी को देखी नी डूंगर कानी भाल्यां फाडी। ई कुमाणस री लास र लारै सीताराम जी रो किलैंडर ई रै सिर कानी भम हाथ कियोडो, जीवतां माळा भव घडी ही कदेई निठ फेरी हुवली, भवार मरयोड रै हाथ मे मोरखो, भर भाग रामायण–ठगोरा री लीला रचना देख'र, भोनै एक चढ भर एक ऊपर ही। बूकियां रै चनण, छाती भर सू डी कनै चनण री गरी भॉगळपां, जरूर भीं भागण री भागळघा सही हुसी बठै– तुळसीदास इ यां बसाता हुसी भर भगवान राम रो भभे हाथ इया हीं धरीजतो हुसी ई बणायोड मुरदै रामदास जी पर, इस सू काई हुयो है बाळतां घी चनण भर खोपरा काई ठा किना चाईजसी,फेर समाधि रो चौकियो भर बीं पर पगलिया, जन्म मरण तिथि भर बडाई रा उघडता ऊजळा भाक–ईं न एक इतिहास रो सत्त बणा र छोडसी–काद रा कीडा।

भडारो हुसी, भेंटां चढसी आयोड मैं। र चादर भ्रोढसी कोई, भण ही मोठो हुसी कनेई किसीक फूठरी साभ'र राखी है? ई रो ही गिद्दी पर बैठयोडो, ई रो बाप ही नीसरसी कोई–ठाकुरजी भोढा'र भेजी बी चादर न घूडघाणी राव छाणी कर'र छोडसी। काम भर दाम री भैलवाई सू सूगली कियोडी चादर ले र बाप कन जावण जोगी ही नी हुवली। लास पर लटट् हुयोडी दुनियां नै कुण 'समभाव' लास ढोवण सू हीं राजी है बा। छोडो, ई गई गाथा न काई छेडो है ई रो। कुभळा र बो उठ खडो हुयो, दोपारै स चालणो है भापां न धनै सेठ र।

दस साढी दस हुई हुसी, जीम'र जियां ही खेड हुयो, टीकू सुनार कथा बावनी। बोली रो मीठो भर सभाव रो भीं भळाकियो है। लोग बीन गाव रो नारद कया कर। गवाड गळी री खबरा र मोट कांकरा सू लगा'र घरा मांयली महीन सू महीन खबरा रा रावडिया बीरो जाणकारी रो चालणी सू रोज निकळ। भो सुख है बींरो, बेच मावो भाव है–मुनाफो को चावनी। ई रो साईड

बिजनेस है ओ, मन नै खुराक देवण, पेटे नै तो रोटी कमा'र ही घालै। बरस तीसेक रो है ।

"आव टीकू" धिनाप बोल्यो ।

"आयोनी, दिनूगै सुणी क रात आया ये।"

"सुणा, गांव री कोई बात।"

"बात ही है म्हार कनै तो, और हू किसो भायसेत बाध आणु ? आज तो एक इसी सुणी है क, सुण'र म्हारा तो कान खुस'र हाथ में आयग्या।"

"इसी काई है, कीं सीख सो मनै ही कर।"

"नव बजी आळी बस में आया दोस, दो सामुडा है जवान सा, एक लुगाई है अधेडसी, छोरो है बेरस बारै तेरैक रो वीं सागै। बां सागै रामद्वारै हू ही जा लियो। लुगाई मनै बा नायण लागी, जिकी अठै आयोडी है आग इक दो दफै। म्हारै सू को रहीज्योनी पूछ बिना, "ये तो बाईसा, रामजी र आसर अठै आयोडा हो नी पैलां कदेई ?" बा बोली, "हां।'

'राम आसर वैसो, आगं री बात, थोडो वी कसर रई, मैंतजी सू मुलाकात को हुई नी।"

"ठा की मोडो ही लाग्यो, जोग री बात है ओ।

"राम आसरै कागद को पूग्यो हुसीनी ?"

कागद कुण देवतो मनै तो थाव रै ही एक जणी बवत सीख करी, ।कागद क्यों को दियोनी, ई रो ही मन ठा है पाटवी थसी जे बीजां तो ईनै 'बीन करदी है, तो हू देखलेस्यू बीन, तीव तीव रो मन ठा है, म्हारो ही नांव पेमा ।है घणा पापड पोया है मैं, नास्या में सू नहीं कढाय सू तो म्हारो नाव फोर देया।"

'राम आसर बाई सा, अठै घणी देख रेख तो चांदा बाई री समझो।"

"हा हा म्हार सू किसी छानी है चांदा बाई थारी। मोडो बणी गगा री गोदावरी छानों म्हार सू सेठ हो की है नी।"

हू दो मिट तांई वीर घर कानी देखतो रैयो, आंख्यां अर होठां पर जाणु लिख्योडो हुव पल लम्बर गे नाघ अर रंमार।' मैं टोरी बात नै भळै,

"तो राम प्रासरै बाईसा, गादी तो थांरो कोई चेलो बैठसी, मालमत्ता री छाण-बीण बो ही करसी।"

थोडी जोस में था'र बोली, 'गादी बैठसी, देख्या भगतजी मो,' बीं छोरै पर हाथ राख'र कयो।

"राम प्रासर प्रा कियां बाईसा ?

"थांरो ही है मो, मर हूं थांरै घर सूं हूं।"

'राम प्रासर व तो सन्त हा नी बाईसा ?"

"घरबारी किसा सन्त को हुवैनी, बैद हा बै तो, कमावता अर भजन करता कमाणों छोटो काम थोडो ही है ?"

राम प्रासरै बाईसा, बां भ्राप ही तो भ्रठ भ्रा'र चादर भ्रोढी ही, राम सरूप जी री पैंतीस चाळीस बरस पला।

'बै थांरा काका लागता।"

'तो राम प्रासर भ्रो एक ही डावडको हुयो थांरै ?"

'छोरी एक भ्रौर है, बा परणायोडी है–नागोर मूं बवै, छोरी पर जवाई वो च्यार दिना म वूकण भ्राळा है।"

"राम प्रासरै भ्रौर टाबर थांरै कीं हुयानी ?"

"दस इग्यार साल हुया। बा आपरी बिरति बदळली ही, जगत सूं बैराग हुग्यो हो बांन।"

"तो राम प्रासर बाईसा भ्रो डावडको ही चादर भ्रोढ'र भ्रागै जावतो घर बसा लेसी तो ?"

"ई री तो भ्रो जाणं पला ही काई ठा, भ्रोम नहीं पळसी भ्रपल सूं तो भ्रोई कीं न कीं करसी ही।"

"राम प्रासरै जे ई न चादर नहीं भ्रोढाईजी तो बाईसा ?"

"तो हूं भ्रठ भूख हडताळ कर'र देह त्याग देस्यूं पण को भ्रोढावैनी कोंरी मा इसी सूंठ खाई है ?"

'राम प्रासर बाईसा, लखदाद है था रै मात पिता न भ्रर मालक मैतजी नै भ्रापरो दिढ नचो देख'र भ्राप पर म्हारी बडो सरधा हुगी भ्रापर पगां री

रज है सिर पर राखणी पाऊ –म्हारो बस पड़तो हूँ आपरी मदत पूरी करस्यूं' बावड़ी राजी हुई एक हळकी मुस्कान बीरैं होठां पर खेल'र थर्मामिट में पाछी ई बिलाईजगी ।''

"हॅं तो टीकू, थाणेदार नें हीं बात करदिया ध्यान लॅंखण में व । साधु को हा भी वठै'' सिनाथ पूछ्यो ।

'हा क्योनी, सुणें हा म्हारी बातां ध्यान सूं अर रह रह देखे हा–म्हा मूं ड सामो । सोच्या हुवला क गांव में सायत सगळां सूं भातबर भादमी ओ ई हुवलो । ‖ खड़ो हुयो एक पगों म्हार सार रो सार बार भायो, बोल्यो, 'भगत चादर रा असली दुषकारी मांय बठा वै सत है, हूं तों साप भायो हूं, भा द ठगोरी, पता ही भठ सूं क्देई दो च्यार हजार रो ढेरो ले'र सग्धी हुई, जि आज पाछी पधारी है, इयां कर करा'र भा भळै की भाड़ो देत है । भाज पणसरी थार भ्रण रामदासजी जिस कायर रोग्यां नें हीं दी हैं । मैं कया भासरै भाप ठीक फरमायो स'तां, भर हूं टुरग्यो घर् कानी ।''

"तो टीकू ई रो मुतळब है भो चाटो रेत मे रळगी दीस ।'

''सगळो नही तो, लखण देखतां, नारळी दो नारळी तो जरूर ही

' रळन द, ई रामद्वारै रो पाड़यो, इस ही पुळ में भायोड़ो है ।''

टीकू बोल्यो, 'बै पाइय री बात करी जद एक बात याद आयगी म

' काईं , कह् नांस वा क्यो चूकै ?''

म्हारो दादो कया करता, ई रामदास रो दादा गुरू बडो टोटका' मर इन्द्रजाळी हो । पतापल बो ही भायो हो भठै । जवान सी एक चौधरण माया करती कदे कदेई रामद्वारै । रूप रंग री भलेरी सरळ भर सतोमत माळी ही लुगाई । एक दिन मोडॅ रो मन सागो को रयोनी दरसण कर'र पाछी आव ही बाव बीन एक पतासो दियो बोल्यो 'रामजी भासर परसाद है खलिए घरे जा'र । भाधे रो त द्वरो रामन्जी बजाव पतासो भाग रो थळी पर पड'र फूटग्यो । चौधरण सोच्यो पतासो तो थर्गो हीं परसाद रो है, पण पर्गा मे आयोड़ो कियां खाऊं, बण सॅं मोरा भेळा कर र भस रे चाट में नांख दिया । भेंस लिह्या जिया हीं चाटो खायो भर रिडकणी सुरू हुगी । चौधरी भायो बण देखी भॅंस न रिड कती समझ में को आईनी बात सुवावड़ो भव है पाळॅ में भावण रो तो सवाल

ही कठै । को दियो लियो भैंस नै तो ही बा तो बियां ही कर । बण खोलनी बीनै खूंट सूं एकर, कदास थमै तो, पण, खोलतां ही बा तो दोनी भर जा'र रामद्वार री साळ आगै ऊभगी । कियां ही पाछी लायो बो बींत, सारीनै घाल'र किवाडी घोडाळदी पाछी ही, पण बा तो भळे बियां ही करै, ताफड़ा तोडै । जाट स्याणो हो समझग्यो की न कीं दाळ में काळो जरूर है । घर में पूछ्यो, "भैंस नै काई दियो आज त ?"

लुगाई बोली दियो कांई हो चाटो दियो हो ।"

"साग और कीं तो को दियो हो नी ?"

"नहीं तो' चोधरण बोली । अरे कीं दियो हुसी, सावळ चेत कर', जाट केर'र दे र कयो । बा बोली, 'एक फूटयोडै पतासै रा भोरा तो दिया ही हा ।"

'पतासो कठ सूं आयो,' जाट भळे पूछ्यो । बा बोली,'साळ माळै बाबै मन क लारिए सूं, बो म्हारै हाथ सूं पड'र फूटग्यो मैं उठा'र चोट ,ल दियो । चौधरी समझग्यो, बण भळे खोलदी भस न, अर भस भळे सीधी साळ आगे जा ऊभी । चौधरी बाबै न हेलो कियो, 'सत्ता बारै पधारो ।' मोडो म सूतो ही बोल्यो, 'कुण हुसी ?' चौधरी कयो 'बोनगोगा ऊभा है बार, माथ ण नै सिर फोड, आ'र बगी बचारो ई न । बाबा बार आयो चौधरी यो काल र कीं मचकायो अर को बिमठायो । बोल्यो इयां पतासा बाटतां आक दिन हुया ?' मोडो पगां पडग्यो बो, बोल्यो गोरी गाय हूं,मैं भस रै कीं न तो मोनी मरा मा काडो घाल दूं । भस सांवळ हुगी अद बो ले'र घरे आयग्यो । व छोड दियो बीं दिन सूं पतासो देणों अर चोधरण छोड दियो रामद्वार जाणो ।

सिनाथ सुण हो, टीकूरी बात कोई ठावर नानी री बात सुणतो हुवै क्यूं । बोल्यो, माईडा आ तो साव गोडां पर घडघोडी सी लाग ।'

"हुवसी, मैं तो दादै कन सूं सुणी, अर म कूड क्यों बोल हा, मैं तो भावो भाव बची है, साद रो मुनाफो ही को कमायोनो ।'

"बात खर किसी ही हुवो, वासना रो दास धाप'र माडो हुवै अर जिक मैं भळे, साधु री बानो । असली मरब्रूल तो समझल दसा आदमी ही हुवे ।"

टीकू बोल्यो 'हो स जाऊं अब टम हुगी पेट नै माडो देऊ की ?"

"ठीक," टीकू टुरग्यो अर सिनाथ दो मिट एकर पाडो हुग्यो ।

□ □

"सिनाथ ?" मा बोली ।

"बोल ।"

"हजारीमल सू अजवाण मगाई ही रे रिपिये री हुणचे'क मसा हवेली । है जिको थोली, पण, हव था कीं वगधर तो हुवनी, देख तो सरी कोरी स्यात है पळटा'र ला, को आपणों रिपियो पाछो लिया ।"

'सावळ मिल तो पनजी रे मठै सू लायदू ?"

"याल परसो, कांकरी कुर'र देक बीनणी म थोडी ।"

सिनाथ अजवाण नै हाथ में ले'र देखी, सू घी की, पर पुडीके रा पाछा ही मूढ बन्द कर दिया हा जियां ही ।

"ई म तो मा कोई धरम री ही को लैंनी," कवतो बो टुरग्यो ।

भाग जा'र राजू मेघवाळ घर बीरी छोरी बरस चवध-पन्द्रक री सामै हुग्या । सिनाथ पूछ्यो "कोटवाळ कीनै दोरो कर लियो ?"

"माईता हजारीमल र जाऊ ।"

क्यो ?"

"छोरी दो लारिया टू ठिया लेजा'र नाख्या, मण सू च्यार टू ठिया देसी ही हुणा चाईज मुण्छेरेक ओ गुड दियो है काळिमो घर भास्यां म घाल जिसो घर थाय री पुडी—एक आदमी री ही को बणनी सावळ चूड बोसू, सो देलो थे" कह'र बण थाय घर गुड दोनू ही सिनाथ सामा कर दिया । सिनाथ बोल्यो, ही बठ ही चालू, थापा बात करां सेठ सू, भई इयां कठब दी कियां तो जीणो ही को हुवनी ।"

ई गळा में च्यार घर है च्यारू ही ओसवाळ है । गळी काद सू भरी है किचाण भाव । कादै में हर मूग पोतडिया रो पाणी खलारा, कागदा रा टुकडा अर कठै बठ ही कुत्ता रो मळ मूत—निकळत आदमी रो भाँख्या उघाड़न म ही जी को करनी ।

'राजू सावळ म्राए, पग भरीजलो, का, कादै में पड़ेलो कठे ही उथळी
ज'र।''

वो बोल्यो, ''घरां में माईता, नळ काई लागग्या, कादो ही कादो हुग्यो केई थाग्या तो।''

सिनाथ बोल्यो, 'म्रा लोगां धम रो वावतो तो इसो कर राख्यो हैं क मू री बाफ सू हीं जी की भरण देंनी म्रर ई कादै मे घणगिण माछर म्रर लट्टा किलबिलै, इत्तो कादो नहीं कर तो काई बिगड़ै म्हांरो, पण आगतां में कियां जगाईजे ? दो माया हुवे वो मोरचाबंदी करे म्रा साम्रे।''

''रात बिरात तो माईता म्रठकर चालणों ही पाप है, पण मोट मिनखां में कवता ही तो सका म्रर नहीं कंवो तो निभाव मुस्कल, पग जावे परो गारे में तो कोई लोटो पाणीं ही को मांसनी भलां ही गळो फाड़ थापो।''

''गळो क्यो फाड़े, रेत मसळलो पगां रै।''

'पण माईता ई गळी में तो सूकी रेत ही हाथ म्राणी ओखी है।''

''म्रा ही साचो कई स,'' म्रर बाला वार्ता में हाट म्रायगी। सेठ बरामदै रै एक खूणै में बठा है। ऊनी म्रासण म्रर कन छोटो सो एक ओयो पड़यो है, म्राग एक रेत पड़ी मेल राखी है। मूंडै पर मूमळी म्रर दोस म्रघ उघाड़ो। बरामदै री डिपणी ही उतराध पासै एक कळघक्की है। छोटी जात घणखरी गाव री हुवो चावै बारली, दाणा म्रठै सू हीं लेवै म्रर कन रा कनै, म्रठै ही पीसणा नाखद, चौमास में तो रिपिय में साढी प दाना भाव, पठ ही टूक। घरां री चाकरी च्यार महीना उबासयां ही लेवै म्रर लुगायां घणखरा, एकर कीं सास सोरो। किरकिर तो रीर कदेई लाणी हीं पड़, खाटी म्रर यासी री परवा ही म्रबार कीनै हैं केसुर सी पीळी दियोडी बाजरी री रोटी सांवळी हुवै तो हुवो, देसी दड़ाती तरवती म्रठ मावता ही कल्याण बण तो बणो, सोरो म्रास लेवण में म्र बातां सो हुसी। बरामदै रै डावै पासै एक आदमी म्रावै जिती दरजी री दुकान है। म्र गेनू हीं सेठां रीं घरू है। चक्की पर म्रापरो पोतो बठ म्रर दरजी री दूकान रो माडो म्रावै—सागै घर रै पूरा रो खोटवों मुफ्त में।

सिनाथ म्रर राजू दूकान मे बड़ग्या। सेठ रो बेटो रूपमल म्रर एक पोतो बरस पंद्रेक रो तोलां जोस में लाग्योड़ा हा। दूकान रो एक बारणो खुल लारे म्रावण जावण न। पिछोकड़ो खासो लम्बो चोड़ो है। खिड़क है लोह री—टव म्रावै जिती। म्रबार बारणो खुलो हो है। सिनाथ वींन गौर सू देखो हो। लकड़या

घर ठ ठियो रो एक जू ठो डिग सायोड़ो हो—बीं कन हीं दूजो और गुम्ब हुव हो। एक पसवाड़ एक गुड़ सायोड़ो दीग ही । चानणे में केई बाट घर केई भाटा घर राख्या हा । घाट दस सुगायां बठो ही—नाली नारियां लियां ठ ठियां खोल्या है पवार ही बा-पड़मां नैं उडीकै है—पेर कोई सो नै मे'मी दूकान सूं ।

नयमल बोल्यो "थावो सिरायराम थाणों किया कांई हुयो ?

थायरो ईंयां ही, ज्याम बात बीं नी पसो सुगायां न सल्टावो मैं थागो पछे करता' रस्यां ।"

सुगायां मायव घर मयवाळा रै घर री ही । दो एक बां में पेट सूई दीगी । पैसां दो च्यार मिट ऊभी रही पेर एक पसवाड बठगी । ठ ठियां रो पूली दो गिंपियां मण खोल्या है—भी घठे । घर रो बडो छोटो कोई खोद'र भेळा कर' रोही में एक आग्यां में पेर मान थापर धूम साम्ब नारियां घर बडी चतराई सूं चिण'र–होड दो मोल भू सू घठे माव । मांच मांच केई सुगायां तो तीन तीन बीसो सूं वेसी ऊ च'र मावं । एक एक घर में दो दो तीन तीन खावण भाळी हुवे तो मार्टे रा पइसा रुसोरा घर सावळ हुवे । बो'वाळां री घरणीयाती एक छोरी बोली, ' सेठां, हमें भाई री बहू उंतावळ करें, छोरो माड़ों है, एकसो ही छोड र माई है, जा र धु पाणों है।

नयमल बोल्यो सबूरी राखो, इयां कठ ही भाग'र थोड़ा ही जावां।"

दूसरी एक बोली, थोड़ो सो सिरावणो कर'र घर छोडयो हो सूरज ऊग्यां सू पलां, सीवो (रसोई) तो जा'र मथ करस्यू, बाजरी लेणी ही मनैं तो पण मब लेग्योडी कव छो पोसीजो घर मव बा पोईजी, माटो ही लेस्यू कळचक्की सू "

छोरी बोली,'माटै में केई दफै कोरी किरकिर माव चाव'र लिंग भाभी, घरे दो लप दाळ हुव तो लोचड़ो ही ऊरलिए, लेग्योडे थाट न पाछो चुण लेवलो ।'

छोरी री बात सू ठा लाग हो क मा कडवी चोट बीं सागै कदेई घग्योडी है ।

एक भ्रौर बोली, ' नयमल जी, रात रो मुड़छी दो एक दळियो नांख्यो पेट में, बा पाण तो रोहो पूगो जितै ऊतरगी, मब तो काया पड़ै है मरतो री ।'

"भोजू तो मैं ही मीं को लियोनो चाय छोड'र बापूजी रै तो तेलो है कठै तो धांन हीं देख ।"

सिनाय पूछयो, ' तीन दिन को जोमनी ब ?"

"खाली पाको पाणो पी'सौ।"

"थारलो काम तकडबन्द है।"

कोटवाळ बोल्यो, "रोटो तो नथमलजी, काम माग, बा पेट में नहीं हुवै तो काम ही को हुवैनी, अर काम नहीं हुवै जद भरोसा कांई ?"

जवान सी एक लुगाई बोली, "वेसो तेलो म्हे ही घणा ही करलां पण छोरां नै कुं खावां कांई, आंतां में कीं हुवै जद ही तो बार बापरै—हू ठ में थोडी निकळ बा।"

एक और बोलो— मरता मूं कितांक दिन हू ठिया खुनै खोद'र बतावो देखा।'

नथमल बोल्यो, "तो धम दयां सोरै सास थोडो ही पळ ?"

सिनाथ थांरी बात घ्यान सूं सुण हो। बींरी मास्या मूं, कादै री बास आोजूं, धावळ को निकळोनी, बो बोल्यो, "सोरै सास तो कादो हुवै, लवकडफाड मनत कीं हुवनी, धम किसै में पळ अर किसै मे नहीं, म्हारै कीं समझ में आईनी ?

"धम खांड री धार है भो, हरेक रै बस री थोडी ही है ?" नथमल कैयो। सिनाथ बोल्यो,'सेठो हू ठिया में खोदै, जीव तो कीं न कीं मरता ही है ला।'

"हां, ई में कणों छो कांई ?"

'पण जीव मर हू ठिया साग ही अलग, बीनै खोद'र काढयां तो ब मरसी ही, अर खोद्यां बिना, हू ठिया निकळन सूं रया, तो पापी तो हुणो ही पडै।"

मा हू म्हारै मूढ सूं को भाखू नी।"

"स्टैर मत भाखो, पण भा हू ठियां री कमाई तो खासी भळी बे ही लायो, कमाई सारू कीं पाप तो थारै ही पांती भांवतो है लो।"

राजू बोल्यो, "सिनाथराम, थांरी छोड हुब अ बापडा मेवै रा रूंख है, भज'र भाया है कीं दान पुन करै, धवळै भूखै तिस्सै में ही पोखै, थाण रै सिपाई सूं ले'र पटवारी, गांव सेवक अर अलकार न आपरी पोटी सारू चिवटी चूण नाखै है, सतावता ही रवै भा न ब।"

सिनाथ कीं हुब'र बोल्यो, "तू कोटवाळ है, भ बातां कडी है, तू बात करै है वेळों कन ऊमो।"

सिनाथ बात पूरी अलम ही को करीनी, कोटवाळा री छोरी बोली, "सिनाथ बडा, थे थारी कूडी कथ न रैणदो, म्हे को समझांनी, म्हानै चूकणदो

पैलां, मरती मरां म्हे, घरे टींगर न्यारा मूकै, करता रया थे थारी पछ, घणी ही टम है।"

नथमल बोल्यो, "रत्तू ल पू णी दो रिपिया, रूलडी मँ दो तू, एक एक भारकी थार छोरां री ही श्रायगी है साग ।"

रत्तू बोली, 'रूलडी नँ दो थर मनँ पूणी दो किंयां सेठां, म्हारो खारियो हो, तू ठो है थर मार हो दो ठू ठिया वेसी वीसू हू लाई।"

"थारी मे माल बीं जादा हुवंसी, ब्यारानी बाद देदी हुवलो, हू तो सिरयोड़ा देऊ ।"

'एक ही जाग्यां तू ऊँचाया हे म्हे इयां धिंगाणैं थोल्यां मिचवा'र अन्धेरो क्या करो।'

'छोर, थारा पइसा ईं रँ, थर ईं रा थारँ वस दिया है ला मँ दस पइसा श्रौर ल तू राजी रह लाकडी री खांण थईं मे काढस्यां भळे कदेई।"

'ब्यार ठू ठिया लारँ रयग्या जद थे कयो, ल नीख नाख, तोल्योड़ा ही है थांन म्बै, भळे ही पन्द्र पइसा तो कम दे दिया मनैं, कह र छोरी कळचक्की कांनी गई परी। धणखरी वां मे श्राटो लेवण श्राळी ही लागी। केया चाम घर गुड ही लियो।

नथमल बोल्यो, "ब्यारा कमाणा है श्रो, बैठो सूतो वाणियो ईं घड रो धान बीं घड में थाल, ठाली बठो कींन श्रावड़, पूरी मिळत करणी पड़ैं श्रो लोगां साग, जद जा'र कठै ही ब्यार छवाना मण री मजूरी मसां बैठै हूं श्रब थे फरमावो ?"

इत्तँन बामणा रो एक छोरो श्रायो बरस पन्द्र सोळ क रो, बोल्यो 'सेठां, निन्द्र रिपिया मगाव पटवारी जी।" देदिया सेठ बीन, गयो वो।

सिनाथ थापरी श्रजवाण दिखा'र कयो, 'देखो देखां ईं न, ईं री तो म्हारी समझ मे रोजीन चौबल खुराक दियां ईं की फायदो हुवनी, धांगळो है श्रा तो।'

एकर देखो सैठ बीनैं, फर छोर न पूछयो "कण दी रे श्रा ?"

'ठा नी।"

ठा नहीं तो कोई बारलो तोलग्यो मिनख तो कीं देख्या करो। सेठ वींनैं पाछी ही एक डालडा र एक डबियैं में घालदी थर वींर बरोबर ला'र, श्राछी

तोलदी । सिनाथ बोल्यो, "ई राजियै रो दुखदद ही सुण्या थी, ओही रीरीं करै दीस ।' सेठ सिनाथ सू की सकग्यो, मनमें तो घॅर गाळ ही काढतो हुसी । राजू री बात सुण'र, सेठ बोल्यो 'भई मन ठा नी, कियां कांई देईज्यो है सौदो तनै, चिवटी चाय ग्रोर ल अर ग्रा ल घोळोडे गुड री डळी ऊपर, बेटै री मा खावै जिसो है गुड ग्रो, म्हारो कोटवाळ है तू कांई याद राखसी, म्हार तो माथोनैं भाडा तू हीं मावै, दो पइसा कमाई करण न ग्रोर थोडा है ।"

"हू जिसो हाजर ■ सेठां ।"

"जांवतो जांवतो लकड़ल्यां तो बेई दाड़ पर नांखद ।"

"जाऊ सा, पण बाई पत ए," कह'र बो बारणै मांकर लारी में गयो परो । सिनाथ सोचै हो, "रोच लियो ग्रो तो, ग्रा डळी मर चाय ई रै मू धा पडसी, मोल्या मू गी हुज्यासी, कम सू कम घटा डोढ घटा सू कम हो लागनी दोना न । मजूरा पर मुलायजो—किसोक मेळ बैठायो है सेठ, पण कांई हुव अक्ल बिना ऊंठ उबाणा फिर—काम करतै न मापां किया बरजां ?"

सिनाथ उठ्यो । डाव हाथ कांनी ग्रलमारी र ऊपरलै पासै नौकार री एक फोटू ही, बो देखण लागग्यो बीन । सेठ बोल्यो 'पूरो महीनो हीं को हुयोनी, ग्रवार ही टागी है ईन ।"

"हां जद ही, पतो तो को हो नी ।"

दूकान छोड'र बो वारै आयग्यो वरामदै में । मखमल दूकान रो मोयलो छू टो दे'र पिछोक्ड़ कांनी गयो परो । ग्रब सेठ हजारीमल जी को हा नी समाई पर, घर में उठग्या हुसी, खू ण में पावलो सो एक कुत्तो—काद में लपपच हुयोड़ो सूतो हो नचीतो ।

सिनाथ वरामद र पगोथिया कन ऊभग्यो दो मिंट । सोचै हो एकर भळै ई बैंतरणी न पार करो । फेर ध्यान आयो बीन, "देखो कोटवाळी रो छोरी बिना लाग लपेट र बिसीक साची कई "थारी कुडो कय नैं रएण्रो, म्हे को समझांनी मरतो मरां, घरे टींगर कूक, छोरी र होठा पर खटाई ग्रायोडी ही,सुकयोडो मू ढो, आंता री भूख आंख्यां में तिर ही, इयां ही बापडी दूसरी लुगायां हुसी—केई दो जीवां सेती, बारी आंता चू टीजती हुसी मांय री मांय, केयां रा मा'हा टाबर घरे बिखबिलाव—दोवां खातर पण बोवां में की हुसी तो, टकी मे कीं हुव तो टूटी में ग्राव, तो ही खासडी जुगासो कांई ताळ । आमता ही रोसी, जामता ही भूखा

कारण कुण सोज ? टुकडो मवै करसी, खेत में कोई डोकरो हुवसी, अधवाची रोटिया, आधी रास, पूरा लूण–मिरच हा री बठै, पाणी सागै गिट'र, काम करतां करतां सास गळै मे लियां, दिन रंडो लेसी। प्रथभूसा, प्रवउधाडा प्रति कोई वेस तेल री बात समझावै, प्रहिंसा री महीन व्याख्या प्रारै कठां में उतार, तो कियां उतरै वा प्रर कियां पच बांर। बाड, खाई, भू पडी प्रर हळ-हाल कांई कांई करणों पडै कांई ठा–जद कठेई प्रन रा दरसण हुवा हुसी–छोरो ठीक ही तो कैयो, रणधो कूडो कय नै–म्हे को समझानी।"

बरामदै मे सूत कुत्तो, प्रचाणचक ही कान फडफडाया–सिनाथ चमक्यो, 'सांतण स दूटग्या, बो भट देखसी टुराबो नही महो करता तो ही दस पांच छांटा खाद रा परसाद मे पाती आवहीग्या, सोच्यो चोळो तो घरे जा र निचोणो हीं पडसी। मूढ सू निकळ्यो वीरै, ' रोयलू रे कुमाणस तनै, कठै बठो हो म्हारा भाग रो तु।" बो कळबळती कनकर निकळ हो। एक छोरो जाव हो बामणा रो बरस पन्द्रै सोळ एक रो। आठवीं में पढ–बो काध पर पाच सव कीला प्राटो माव जितो पींपो ऊच राख्यो हो। सिनाथ वीन चालत ही पूछलियो "छोरा प्राज काल आटो घरे को पीसोनी रे ?

'पटवारी जी रो है।"

' कित्तो है रे ?"

"पांच कीलो।"

"कित्ता पइसा दिया रे–पांच कीलो रा ?"

"की नहीं।"

"क्यो ?"

"कदेई को देवैनी, ग्राम सेवक ही को देनी–दोना रो हूं ही लेजाया करू धणी दफै।

"प्रर तनै ?"

' मन साबासी ! मोटो बणो जाऊं तो, मास्टरा न सिपारस करद म्हारी।"

सिनाथ कांई जेज वीर साथ सागै चालतो रयो। सोच हो जद मैं पिसाई दे'र प्याल नहीं कर तो सिरपच प्रर सेकेट्री इसा दातार कठ सू प्रायां, व तो

बडो सू पला तेल पींदणियां है । चोखो सेठ नै इसो छोरो अर सस्तो शिकार कठै लाधसी, च्यारो ग ही घण सू घणा पाच रिपिया हुता हुसी महीनै रा रिपियै सवा रिपिय में एक आदमी, इतो मस्त में तो खरगोश ही को मरनी, सखदाद मिलणो चाईज नथमल नै ।

सिनाथ भळे पूछयो—"पटवारी जी कठ है रे पवार ?"

"पचायत भवन में ।"

"कांई करै है रे ?"

"फाटक में पवार केई डागरा लिलाम हुया, बांरो कोईं हिसाब करता हुवला ।"

भौर कुण कुण है बठ ?"

"सिरपच, पटवारी ग्रामसवक अर सेकेट्री सगळा ही है ।"

'सन ठा है, कांई लिलाम हुयो पवार ?'

"एक टोपडो, एक गाय ही, सांड हो बूढो सी एक ।"

"टोपडो कण ली, ध्यान है कीं ?"

"बोली तो मलिय कोटवाळ लगाई साठ रिपियां में, पण लेईजी वा हजारीमल जी वास्त है ।"

छोरो फटग्यो एक पळी में । सिनाथ न ध्यान आयो, छोरो साचो है, पवार थोडा ताळ पैला निब्ब रिपिया एक छोरो ले'र गयो हो सेठ सू । पटवारी अर सेकेट्री र एक दारू री बोतल, बाकी मे सिरपच, ग्रामसेवक अर दो च्यार रिपिया कोटवाळ न । टोपडी निरवाळी सेठ रै घरे पूगगी । मोळो कोटवाळ राजू केवतो हो, 'म मेवं रा रूख है, पटवारी अर गावसेवक कांई ठा कित्ता नै मैं पोशे ।" बींन कांई ठा दूध कीगे हो है, बिलोईजसी कठै हो आ'र, पसेव कींरो ही पड़सी, अर सोनो आ'र कठै ही चमकसी ।

बींनै टोपडी रो ध्यान आयो, फाटक में बण देखी है बींन कई दफ । सिधण, तीन सवातीन बरस रो, सूधी अर फूठरो वेसो । साखीज्योडो हुणो चाईजे, पांच छाव महीनां में ब्यायगी तो कम सू कम दो हजार री गाय हुमी-मंडत देखता दो हजार में [illegible] कुण [illegible] । पांच कीलो दूध तो पलाण रै ही हुणो चाईजे धरम करम पाळो हूं'सी कोई पण छोरी साण ठोक कवती ही, 'सोको कुडी कम नै, मरती मरी

म्हैं। पेट मे नाखण ने आटो चाईजे पैसा, डील ढकण ने मोटो पतळो पांच-सात हाथ पूर अर सिर घुसोवण नें च्यार हाथ फातरो, धरम करम रो नाव पछ लेवो तो भी समझ मे आवें।

पर मायग्यो हा, 'अरे भजवाण तो भलाऊ मा नै।' बीन ध्यान आयो अर वो मांय बड़ग्यो फुरती सू।



अठै धनजी सेठ री दुकान है—चवड़ी अर लम्बी चौड़ी। अठ लूण तेल तमाखू सू ले'र मोठी मू मिया अर रातदिन र कपड़ै ताई—जरूरत आळी स चीजा लाध। घणी में तो काई लिपस्टिक अर नख-पालिस री वो च्यार सीसी तक, सामली अलमारी म ठाई लाधसी—जेवा बांन मन: हीं नायक सभी अर मेघवाळां री छोरी छींपरयां का बोरी चलती चटकती जवान बीनण्यां हीं। ई सू आन काई, और तो पांच पइसा मजूरी हुणी चाईजै—बीन भरो चाव बीनणी, बामण में तो टक्कें सू मुनळव है।

दुकान आग पत्थर र गोळ सम्भा पर बडो बरामदो है अर ईं रै चिपतो ही लोह रो मोटो सिडक-सिडक में आगीन घर है आज सू बाईस तेईस साल पैलां घर री जाग्यां पर मूनवाड़ हो, अधेरी रात म कोचरयां बोलती वो डर लागतो अर दिन में आन्मी रो जी अमूजतो। एक खोखरो खेजड़ो अर एक ठूठो जाळ हा ईं में—बारै बाळका में गोह अर कोचरयां अर सरीर पर पंखेरू अर चैत मास्यां रा छत्ता हुया करता। दुकान री जाग्यां हैती कसाई वाळो एक कच्चो माळ। बीमें लागती सेठ री दुकान। आधी में दुकान अर आधो में सोया उठो। निमधी निमधी एक चिमनो जग्या करती रात री दस बजो ताईं, बीरै चानणै सेठ दिन भर री पोत बाड़ी मांडतो मिलावतो।

आज सिरमी री बर है। बीं मागन मूनवाड़ में हुवतो गुळतो एक घर टीपें-गू भारियां पर उठग्यो है। बाड़ा, खेत अर भाठी बावरी दो मुरब्बा। दो पुनी दो बरस हुया है एक ट्रक्टर नलियो हाडी रो बुर ई में नाटी कामी भेजदे अर पगाड़ मायरा म ईं नें पगीण्नें कमाई रो काईं बांको पइसा लियो मोग सारै सारै फिरै। सन्न रकम तो आज ताई जन हो पूरी करती, अबै मुनाफो ही मुनाफा है। माल धर मड़ीनां में एक ट्रक सेंवण री ओर छोवै।

चीणों चारो लूटो, घाड में सूतर री मसीन, गांव रो ही नहीं आसे पास रे केई बासा रो घणखरो कचरो अठे ही बट । एक होळी भर एक पोटा यापण आळी घरे काम करें, लोले जोलो खातर दूकान में, एक छोरो भौर है।

दो भाई है-चारे टावर टीगर दो तीन पढ़ बीकानेर में। बधतो परवार भर बधतो ही बोपार। भाई दोनू ही पइसा पैदा करण री मसीन है-लक्कड सू घादल । रोही में बठा हुवे तो ही चित पुट कर'र कमाई करल-मिनख मिलणो चाईज भानें। गांव में गाये भलकार री आं सू मिल्यां बिना, समझलो जात ही को पळैनी। साख भाछी भर कमाई में भल्ला पट्टा। ठाकुरजी रो मिन्दर करा राख्दो है गाव में, पिंडत रामधन सेवा करें ठाकुरजो री, भर भघपूण घटा दूकान ही भाव गोपाळ सहस्र नाम' बांचणन ।

भवार ग्यारें साढी ग्यारें बजो हुसी म्निरी। धनो सेठ गिद्दी पर बैठो है। भैंतजी री सास नै सावळ एडै लगा'र दूकान बस खोनी ही है। बधती चांद, विसकतो चश्मो भर चनण री गोळ टीको-सदे परमारथ रो पूतळो लागै । रुद्राक्ष री महीन माळा भौर राछ परणन कण ही साधु भसा राखी है क ई सू भ्लडप्रेसर को हुवनी। सेठ बरस पचास का ले ही लिया ग्यार छव महोना ऊरर भलां हीं हुवो । सामीं गिल्ल री पेटी मल राखी है। गिरधारी बामणा रो छोरो, बरस बीस बाईसेक रो तोला भोलो कर भर सेठ माइचा नै पूछ पूछ हिसाब साख पइसा लेव देव। अबार गान सू कलम उतार'र बही में लीकां खींचै-तिजर गडो'र बड़ी सावधानी सू। जरूरत मुजब ग्यार भाळो माड'र कलम कान पर पाछी दी द यो टीगमी जाणू कान बीरो क्लम स्टण्ड हुव। सामी देख्यो तो बीनैं करणों माई पावभो दीस्यो । दूकान में पग राखतां हीं सेठ बोल्यो, ' भाव नेवगी, किया भाणो हुयो ?

'भायो तो पर्वा पगां हूं, पण थार कनै पे जाणों सीधै पगां कुण भायी ?"

'भोल तो सरी कीं ?"

'रिपिया चाईजमी हजार बारैम ।"

सायें ही हसा, इसा रिपिया तो बक में सार्थे रहै हैं', तो ही इसो कांई जरूरत पड़गी भबार ?"

'म्हारी बक तो थे हो हो, छोर रो ब्याव मडायो।'

"भबार चौमासै में बिना रुत हो ?"

"सोचो तो था, ही के, असक ठाकुरजी जमानो कियो तो उनाळ की ससवो हु छोरे री ठा ठप उरळे काळज कस्या पण सेठां, नर चीती नही होत है, हर चीती तत्काळ, बिना तेवडी आ पडी खरच री लाद, ई रो काई उपाव ? छोरे रो दादो सुसरो चालतो रयो—सग्गो खुदाखुद आयग्यो, ठोडी र हाथ लगा'र बोल्यो, मालका म्हानै तो कूकू किया देणी है, अर थारो मँगी रो पान हीं को खरचाणोनीं, बाप जीवत जीवत जी री कह दरसाई क यात गगा र भेळो ही म्हारी पोती पेमली न हरखे कोडे धोरिय प्याठ देया, बतावो बीरो कयो मर्दे किया लोपा, म्हारी बिरादरी में सेठा इस मौक किया देवण रो म्हातम की जाता है ।"

फेरसो करणो ही पडसी पण चोखो'क, इयां अणचींती लिछमी थाई माथी सासु रा पग दाबसी अर तन पुरससी कँवळा कँवळा फलका भागी है तू ।"

"हां टम तो भवार पग दाबण अर पलरा पुरसण वाळी ही है । पुरससी बापडी यां जिसा भाग्यां न कोई—मन घरां रो हुसी बा म्हान तो बूढे बार बूटसी नहीं तो ही म्है तो फलका नर ही मानस्यां ।"

हां तो बोल किया देणा रिपिया ?"

'आठ है आठ दस बोरी ।"

'चळिया है ?"

एकदम, न कांकरो अर न झूसळी ।"

"मणां महीन अर कोरड़ू ही नहीं हुणा चाईजे ।"

"कांई बात करो सेठां, तुरकणी रै कारयोड़ै में फिन्डको निचळ पोल बढो है दाणो दाणों गिण लेया दका है ज्यूं है ।"

"भाव बोल ? '

' दाई सूं पेट छानो है ? वियो बजार भाव सवा रिपियै सुण्यो है ।'

'एक रिपिय पच्च पइसा में लेता करल, भवार ही तुलवाऊं," कह'र बींरै चैर सामा एकर साग्ठ जोयो । सोच्यो, टू पो आग्यो है अब माईड़ो ईनै पायो है लिछमीजी भेज्यो है फन्ड खावण न, वो देणा चाईजै थापो नै पारलो ऊरपा स रू जवा'र । प्रगट में बोल्यो, बारै तेरै कोस लेजासो बींरो भाडो, थानै धाडत घूगी, बिक्री अर मडी टैक्स अर कांई ठा किती रकम रो जाळ, उळमे

पछ सोरै सास निकळनो हीं श्रोखो, न खावण पींवण री सुध बुध श्रर न न्हांवण निवटण रो सुख, दो दिन रो यारो खोटीपो गयो मस री पुछ में। समझदार तो सहर रो नांव ही को लती, फोडा देखण रो कोड हुवै, जद बामण न ही मत पूछ, टुज्या अवार ही श्राया पछ म्हार सू राम राम कर लिए।"

सेठ री बात सुण र लवास जी ढीला हुया। थोडो पाईज बतोर न, थिरतो सेजाए, बद सहर गयो, अर बद श्रा'र सामा सु भी वरीजी–वन बेटो न ही सागी है। बोल्यो "सेठा देखल ये ही श्रबै हूं देखस्यू थी दुळयो तो ही मू गां में पण कीं लाड ती म्हारो ही रासो।"

'इया म्हांन किसो रामजी न जी को देणों नी। भाव सू बेभाव थोडो ही घालस्यू ?"

"तो ही काना मे तो घालो कीं ?'

"देख लखण री जी मैं तो म्हार ही रिपिय कोसो घर थारी जाग्या जे दूजो हुसो तो हू लेंवतो ही, पण थार खातर पांच पइसा ऊपर है, खाली कर श्रद पइसा ल हाथो हाथ, समझल सुगन विडी तु ता जीवण ले र ही आयो है।'

"तो हूं लाऊ हू फेर" कह'र बा गयो। सठ उठ'र बरामद कानी आयो तो श्रागै एक लुगाई श्रोढणती में भेळी हुयोडी पडी ही कन जवान सी एक छोरी बठी ही। बौनिजर हुंती ही, सेठ पूछ्यो 'क्यो बाला किया आई है ?'

शी जवाब सुणतां हीं श्रोढणी सावळ कर'र एक बाकरहा उठी। ढील र सळ ही सळ गार्यारै र पांच सात जाग्यां गांठां लगायोडी। थोडी थोडी पूज। सेठ पूछ्यो बोलो माजी ?"

गू वटो कीं सावळ करती बोली होळ होळ, 'सेठा छोरी सासरै आसी पांवणों आयोडा बठा है घरे, को ओढणिय रो पूर तो सिर पर नाख र मेजू अ ही हुर, म्हारै कन तो काई हो, बापडी कीला पांचेक सू द लाई ही वांवळिया रै सासर सू श्रोल छोन–मेळो कर करा र किया ही। जांवती पूर पल्लो करलेजासी सुराख है बापडी म्हारी ही सोमा साज दे'सी।'इयो एक'र म्हदोरो श्रांवण लागग्यं फेर बोली "डण हीं गांवतर गयोडा है ये डमसर लगाया पइसडा कीं, श्रांघो श्र भजाण बरोबर है हू तो कीं समझू नी सवासणी है, ये ही माइत हो ई रा।' कह'र डोकरी मळै पाडो हुगी।

"काई ताव आव ?"

छोरी बोली, "सियोदाउ है।"

'आव बाई आव, आ'म्हाने ! देखां गूद।"

छोरी गोयळी सामी करदी। गूद तो अफ्लाहोतून हो। सहर रो भाव सेट नै ठा हो दस दिन मलां हीं आयो कीसो लियो हो सोळ र भाव आठ रो। आप रई करा'र लिया कर, दिनूग दिनूग। तोल लियो बीन, पचास ग्राम कम हुयो पांच कीसो, में। बोल्यो, 'ल पचास ग्राम रा किसा थाना साथ पर री छोरी है पैतीस रिपिया हुया।"

डोकरडी मळे उठी हिम्मत कर र। बोली 'एक तो मोठणियो छुडती अर लण रो बटको आसी क नी थांमें ?"

'बगी री पुछ मा तणीं ही है आवो मत आवो थारो इतो हेत है तो कीं मदत म्हे ही करस्यां" अर भेदिया सेठ बत्तीस रिपिया हुया स कया तीन रिपिया थारा और बच्या है।'

'ध्यान लिया वे, मलो हुया थारो भोए भोए छांया पडपां हो थारी। अबै तीन रिपिया रो सीधो और तोल दो चावळ अर गुड़।' देदिया सेठ री दो गोळी और ही डोकरडी न, कयो लेलिए थाय साग, काल - दुलार।" आसीस देवती गई डोकरी-छोरी रो हाथ भाले भाले। से फडका लिया अर आसीस ही—एक सू मुनाफो अर दूज सू मनराजी। दा र बो गवर घर में गयो आगै छोटो भाई लालचन्द आयोडो ब

'कद आयो तू ?

आयो ही हूँ बस।

'भाव ताव ?'

मोठ सहर मे पोच एक

ज्यू ही चल तक ट्रक गोहूँ एक प

मनूपगढ़ सू। मठ भी आयो मास

बोरी बीसेक मोठ

मे बोरी दसेक बाजरी एक पांच

काग्यो। जावत ट्रक में पं सगळा

पसवा दिए ई मे पचार मजूरी ८

"भाछी धाप ही है, साधु म्हात्मा सू सें'र रछी बूची तांई सैं लेवै ई रो घूट तो।"

'चोखो'क, पियां ही फायदो है आपरो तो, महीनै में आधी पेटी मसा छेडी हुती, अबै दो पेटी तो हाथ र इसारै लागै जावै पर आग बयतां हीं लेसो।'

'हो सैंतजी विदा हुया काल ?'

"तीन च्यार घटा जबान घटकी म्हो, प्राण द दिया हा रात न बजी सीतेक, थादा घर हू हो हा बठै।" इत में ही लालचन्द रो छोरो आयग्यो कनयालाल बाब र पगां र हाथ लगा'र ऊभग्यो।

'तू हीं मबार ही आयो काई लाल लाग ही ?"

हा।"

"अब पढावडी किताब दिनां री और है यार ?"

छब एक महीना मोर समझो।'

"पछ तो पास है कानून ?"

मर पइथ धर्।"

'तो हूं फेर तो लाडेसर, कोई तिकडम भिडा र मजिस्टेट बण जद आयो तो आगै एक पांच सात हुजार लागै तो लागो, रिपिया रांड रा इयां हीं छोरो बठी ही। चोख।"

बौ ी अबा'बार आग्यो रो तो नांव ही मत लेया, एक पोस्ट भर सो डील र सळ ही सळ बजार रिपिया तो लोग आगू छ देवण न त्यार बैठा है, घूज। सेठ पुछ्यो बोल।"

थारी इया ही गई समझो। वकील पणा तो थार सू पावणों आयोडा उठ। लात री लोकां तो, म्हे सखा ज्यू तू इसा फोडा ही हुर, म्हार मन तो।"

सासर सू ओल छो। बाबोसा, हरिजनां री तो फेर ही तार है बांरो छोरो कोई सुगाव बापडी म्हीन तो घास मळै हो की सोर सास मिल सकै। बामें ओजू फेर बोलो 'डब पढाई आळा।"

भजाण। बरोबरजन तो तू ही बता, वाणिय रो बेटो किया बण ? खर, पढाई ता कद'र होथा आव आव थोरस लाग सोचस्या वी लाली तुरू तो लगा देस्यां

दस पांच हजार बसो बाणियें री सिद्धि तो लिछमी सारै है, रूपसी पल्ल तो रोही में ही चल, ईं न मू ढो सगळा धोव ।"

गयो, ग्रर सेठ रसोई म वड्यो । जीम जूठ'र निमळती वेळा, चांदा होळ में सन करी धोरै मे ग्रांवण री । जियां ईं बो मांय वड्यो, चांदा किवाड़ ग्रोढाळ लिया घोर रा, बोली होळ स, 'तीन हजार है चांगी माळा ग्रर दस हजार नडा मोट है ।"

ग्रौर को ?'

"गणो है ग्रठाणगत रो," वण देख्यो भरी तीसेक सोनो हुवलो ग्रर चादी पांच छव कीला । गळिया न तो लाल सार्ये मेज'र वेच बट खतम करो बास म भळे कोई भीझट खडो हुव । बास हुव न बासरी बाज । रिपिया ो भाव बजार की म दो है–बारै एक रो, बार तिया छतीस हजार हुया, पला एकर चवध रा राम हा, साव रा दिन ग्रायां ब ही भाव भळे हुज्यासा ।"

सेठ चोकन्नो हुयोड़ो सो ईं न बीन देखतो, बारै ग्रायग्यो । जा'र पाछो ही बठग्यो दूकान री गिद्दी पर जब र । गिरधारी नैं बोल्यो जा रोटी ला'र ग्रांवतो डाक देव लिए ।

सिनाथ धनजी री दुकान कानी ग्राव हो । स्कूल रो हैडमास्टर मिलग्यो ग्रव बिचाळ सै । बरस पच्चीसेक रो है–यू० पी० कानलो ।

ग्राछी पट सिनाथ साग बी री ।

"माटसाब, इधर कहां, ग्राप तो धनजी के यहां रहते हैं," सिनाथ पूछ्यो ।

"रहा था कल तक, ग्रब नहीं ।"

क्यों ? '

"हाथ जोड दिए सैठ को डर लगता है बडे ग्रादमी से ।"

ऐसी क्या बात है सींग निकल ग्राए हैं क्या उसके ?

'सींग भी बडे प ने ग्राप जानते है शिवनाथ जी छोटे प मे ग्रपने से पार नहीं पडते । मकान किराए में, पांच सात सेडले छोरे छोरियों की पलटन एक-डेढ घटे रोज माथापच्ची करो उनके साथ रविवार को भी घेर लेते हैं दम घुटता

था, फिर भी सोचता था, चलो किसी तरह निभ जाय । एक दिन सेठ ने कहा, "माटसाव तेल दलिया तो स्कूल में आता होगा ? 'हां आता है सा'ब', "तो करो पांच पसा कमाई आप भी, आपके सहारे दो पसा हम भी कर लेगा क्या हर्ज है इसमें ? मैंने कहा "सा'ब यह कसे हो सकता है, बच्चों का है वह तो ।" बोला "बच्चा उसके बिना पहले कभी भूख नहीं मरता था और अब नहीं होगा तो भूखा मर जाएगा-आप बहुत सीधे मालूम पडते है। आपका काम नहीं पडा अभी तक, पहले वाले माटसाव की लडकी का विवाह हुआ था, बोले सेठजी कसे पार पडेगा? हमने उनको तरकीब बताई "तीन तोले का जिनस बनवाकर दिया, थोडा चांदी का अलग, विवाह सोरा होगया आपके भाई बहन और कोई बीबी बच्चा नहीं है क्या ? वो माटसाव रिटार होगया, आज भी हमको याद करता है, पइसा से कोई नाराज नहीं हुआ है।" मैंने कहा, 'आप ठीक कहते हैं, पर मेरे यह बस का नहीं।' बोला पसे का जरूरत तो आपको भी है, मगर आप जो थोडा कच्चा कहते हैं और सोच लेना आप।" मैंने कहा, 'ठीक है सोच लूंगा सा'ब ।' उनको क्या कहना था शिवनाथजी, मैंने सोचा बिना मतलब सेठ नाराज होगा-सागर में रहना, और मगरमच्छ से वर ठीक नहीं भलाई निकलने में हीं है, स्कूल गली और अपन, जा रहा हूं अब।"

सिनाथ एकर वीं कानी मरघालु भांख्यां सू न्हयो, अन्तस गदगद हुयो, बोल्यो "इसी चट्टानां पर मकान बणसी ब हो टिकसी जुग र बाढ तूफानां में ।" वो बोल्यो, "बेधडक रहो माटसाब, अच्छा किया कीचड मे निकल गए आप ।"

वो दूकान र बरामद में बठग्यो । सुण मे एक पास बोरयां री थाग लागी पडी ही । बरामद री सफेदी पर सामोसाम 'तुलसी या ससार में भात भात के लोग भर नीच वीर "अनुशासन देश को महान बनाता है ।" पेड लगावो, परिवार नियोजन करो' ई ढग री बोच्यार मोळ्यां और लिरयोडी ही लाल अर मोट फूठर हरफा में । पांच सात महीना पर्ला, इसा हरफ बरामद री पूलमें हीं कोइनी । सिनाथ न देखता हीं सेठ बोल्या, 'आवो सिनायराम हूं थांन बुलाऊ ही हो, ऊमर मोटी है सा याद करते हो आ पूग्या ।"

'ऊमर मोटी है तो फाडा हो मोटा पडसी । थांणों वो हो ही मेठां, अब यहा बगो मायग्यो हुस्यू ।'

'समझदारी करो पण बिना बतळायां हीं थे जिसा आवण चाळा सम झदार और किता लाघसी गाव में ? मन तो डर लाग सिनाथराम क बतळायां

कोई यायो नहीं पडज्यावै—सकू हू तो कैवतो हो । मरणो भी रो ही मर सेठो बीन हीं। इसै मोवे जे कीं नहीं करां तो हो मुस्कल। आखी रात आंख्यां मांकर काढो, रवका, चिट्ठी पत्री सैं देखो समझो जांवतां जांवतां आ भुळावण दी म्हाराजरा, क, रिपिया म्हारा सदाई वर लया, कोई को नटनी मर प्रसाद म्हारो रामजी लेवे, म्हारे सरप सारू कर देया। बतावो अबै, म्हारो कांई दलाली है पण दोखी तो है मर सोनी तमास्त एक साथ।'

"करणो ही चाईजै हुरी है पुन,री जड़, ई में जे पांच रिपिया पर सू छीव तो ही ये समय हो–कीं जोग हुवै बीनें ही कईम।"

"जोग जाग, म्हास्यो है बीन सयाणो तो पड़सी पार, पां सगळां री बाव है, तो फेर मन चिंता ही क्यांरी ?'

"भुळावो म्हारै मोळ सारू म्हांन हीं। म्हारी मरज या है सा, मैंतजी रा दोय से रिपिया मर दो री मिति ब्याज आपांन मगसी रा, दूप खोळ र देणी है पण तीन च्यार महीना मबार खळियो नहीं निकळ अब तांई बणना ओखा है।

"इया कांई करो सिमाथराम, सरायोड़ी खीचड़ी दांतां चढ लावो हो नी, हूं तो बोवणी ही थां सू करो चाऊँ। आ तो नहीं हुणी चाईज, समझो स्यामी मोडो रा पट्टा है आस मोलाद वाळा हां आपा, आपणी कांई काम रा, टैम पर लागग्या मर ये निरवाला—कर्जा मर रस्तो, तो काटणा ही, माछा—क्यो कमजोर करो मननै ?"

'इला थका देवण सू कुण नाराज, पण मणहूत ये समझो हो भाठ सू काढी हुवै, ये थारै कनै सू भेळ दो एकर, आपनै ॥ च्यार महीनां छेड दूनता कर देस्यू।"

"हूं बतावो कीन कीनै देस्यू पांच सात हजार रिपिया लिडायोडा हैं बांरा, समझलो ई मौकै हू बारै गयोडो हू का मनै सौ बरस पूगग्या हुव समझलो, तो ये किर्यां करो—म्हारै नहीं हुयां काम थोडो ही रूकतो, म्हारी अरज या है आपन, क जिसी नीयत लेवती बेळा ही, बा ही अबै राखो।"

"नीयत म्हारी बीं बळा ही माडी को ही नी मर न अब।"

'नहीं माडी है तो बगसावो, च्यार महीनां पछ कण मागया, मर कण लिया ?'

"कोई तो चादर ओढ़ै ही सो बारी जाग्या, बीनै देस्या।"

"अठार लाख पाव ही को देवोनी तो च्यार महीनां पछ अगल अजाण न कांई थोळ्यो देस्यो ? ब्याव है मा। थारै आपर हाथ सु मढ़योडा है घोळै पर घर ये मसळामसळा करो, निंदा हुसी गांव में थारी, कैसी बो थानै कैसी, रुक्को रास देस्यू हू तो पाच पचा सामो।"

अब सिनाथ सू को रहीज्योनी, निकळगी बीर मूढ सू, "हू तो च्यार महीनां पछ हाथ जोड़ र स ब्याज देवण री कैऊं, पगला रा दिया मैं लिया, थारी भी कांनी कोरी ही, जिक मैं हीं ब्याव है म्हारो, निंदा थारी ही हुसी म्हारी, घर ये बाप बेटी सारी रात छोव हा पेटी भर गांठड्या, थारी बडी सोभा हुसी—देस्या थम र पूछका न।"

सेठ रो चैरो ऐकर गईजग्यो अर घुसग्यो थोर—एडी सू लगा'र चोटी ताई, बण सिनाथ कांनी आधो मिट ताईं देख्यो निजर गडो'र, मिनख चराव बो, समझसा कांई ताळ लागै ही 'रात मैं बकर थोडी आग्यो हो।' बोल्यो, "ठीक है था मत देया, मैं मान्यां म्हारी भूल हुई, मन कांई था हाम करतां हाथ, इ या बळसी, थकरो थारो पांच मिनखा में गस देस्यू, म्हारै भाव बीन फाड फैरया, भला हीं राख्या, आपा तो दूसर जे थान बतळावां तो देभातिया समझ्या भलां हीं।"

"राख देया, फांसी हुव तो हुवण द्या", कह'र बो खडो हुग्यो। सेठ बठ ही बैठो रयो। मन मैं बस एक ही घुमण—अठै भण था कैई है बठै पाछै दिन भी आपानै भणचीरया फोडा ही चाल सक, पांच पचास लाग'र ही ईरो कीं टूणों हुणो चाईज। दिमाग बण दौडायो, दौडायो ही जरूरत सू ज्यादा। कनपटी री रगां तणीजगी, अर माथो मोकळो गरम हुग्यो, पण, दिमाग दौड़नो बन्द को हुयोनी। दुविधा में रस्तो लाधणो दोरो हुग्यो।

छेवट एक जाग्या जा'र बो रुकग्यो, कांटो निकळ ज्यासी पण, आपां न चोट कठै ही नहीं आणी है। बन्दूक छोडण नै कांधो दूसरो चाईजसी, एक पइ तो एक मजो दो पड तो दो। है एक कांटो—कांट न कांटो ही काडसी। मन नै कीं ध्यावस हुयो। उठ'र बो एकर घर कांनी गयो परो।



दिनूण री टम ही । धनजी री बाखळ में छव सात छोरया–दस दस बार बार बरसा री । केयां र मसी काछन्यां सिर उघाड़ा केस बरडा मर उळझ्योड़ा, पेरां पर धूर, पेटां पर मल रा रींगा मर पग उबाणा । दो एक र मला चोटा कोटडा हो पण ओर मीर । इसी ही लुगायां ओर मायगी । सगळा र हाथां में पारिया, कूनडिया का काळ पींद री सिलोर री मुंची देगच्या ही । दो एक न छोड'र सगळा री बगलां में का माथां पर लोल री छोटी छोटी भारमया, हुवसी दो दो तीन तीन कीलो री । यणसरी म नायक मर मेघवाळां र घर री है—एक मा में ढोलण है । सगळी छाछ लेवण न मायोनी है मठ ।

घर र घुगीमोड आग एक चोकी है, बीं पर एक पीडो पड्यो है । सेठाणी बठी है बी पर, धोळो धोती मर एक गोडै पर तुळछी री माळा मेल राखी है । धनजी री मा है मा–बरस सित्तर बबत्तर र मन्दाज । आग छाछ सू भरी लोह री एक मोटी बाल्टी, कीलो प त्र नडी छाछ माव जिती घर राखी है । मध कील'क रो एक लोटो है–लकड़ी रो हत्थो लाग्योडो सेठाणी बीं सूं छाछ घाल । ढाई तीन कीलो आडो छाछ घर मे पसा हीं भेजदी, लार बची बी म पाचाना पाती पाणी रळा'र बाल्टी भरसी । कीन हीं एक, लोलो की जादा हुवै तो कीन हीं दो मर कोई नहीं लाव तो बीं नै चिट्ठो उत्तर हो ।

एक छोरी चोकी नीचै मा'र कमथी 'लाबो दादीसा, मावण दो ।"

' थारी भारकी कठ ए ?"

' नासदी मी, दादीसा, टोपडिया र ठाण मे ।"

बूडी मर, ला देखा मन ।"

छोरी ठाण सू, लोलो नाल्यो जियां हीं ऊँचा'र बोली, 'भो देखो ।"

'दो गुबाळा ही पूरा को हुवनी, इसो काई लाव, कीं तो लाया कर ।"

"काल ई सु दूणो सो ये ।"

"ल ष मायो मत लगा, जाणू तनें दुणो सांवण झाळो नै," कह'र एक सोटो छाछ घालदी । छोरी बोली, "काचो काचो मुरट लाई हूं, कीं तो और घालो दादीसा ।"

'फोटाई मनैं को सुवावनी," म्हाबो'क कळसियो कर'र 'लै मौर, जा परियो, ओरां न ही पाती मावण देसी'क नी ?"

इयां हीं मोर सुणाया पतायां न ही छाछ माल ही भर ब म्हारी भारक्यां टोपडियां र ठांण में सेठाणी न दिसा दिसा नांखे ही ।

एक लुगाई ने पूछयो, 'भा कींरी बहू है ए ?"

एक जणी कएा ही कैयो, "मासु मेघवाळ रै बेट री बहू ।"

"हूँ ए सुणी हैं, हाथ री चतर बताव तु, टोपडियां रो ठाए तो सावळ करदै घोडो, पीळी घर पोटां रो लेव कर'र । पारियो एकर, बू बो मारदें भींत पर दो मिट लागसी तन तो ।'

पण बापडी पारियो रालदियो, ठाए ठीक करएनै गई परी ।

इतै में पंडित रामधन आयग्यो, खडाऊ पैरयां, केसरिया साफो, हाथ में पचपात्र, घर जेब में टीपणों । पाठ करण आव हो दूकान में । बोल्यो, "लो चिरणामृत ।" सेठाणी हाथ मांड दियो,

'अकाल मृत्यु हरणम्, सब व्याधि विनाशनम,
विष्णोन्दकम पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ।—

श्लोक बोलतो बोलतो पंडित पांच सात टोपा निवांण नियोडी हथाळी में नांख दिया । सेठाणी बोली, "नाड भाग दो साहू पदधा है लेजाया बांवता ।"

ठीक है।'

'गायत्री रै पाठां रो वे केवता हा भो कद कोई करस्यो गुरु ।"

"काम मोर में इमरत रो दूधडियो है गुरु वो काल हो कर देस्यां ।'.

'थरे ठाकुरजी री सेवा करण नें पढ़ ?"

'छोरी पा बावी ।"

"घर माणिय रा गिरै करदा है, ठाकरजी रो दान करावन खातर पे करता हा नो कांई कांई समान करवा'र राखू ?"

म्हार ध्यान में है, बार साढी बार बजी हू माऊ हू, बिना कयां हीं।"

छाछ पाळी पांच सात मोजु राड़ी ही पंडितजी बा सामों देख'र कयो, 'मिनख जमारै रो मोख मूट सेठाणी जी, छाछ मवार री टैम में पड़ो फठ है दूध छोड, पळोवण रो पाणी सवालक बेचदै मोय, छाछ तो टीको देवण न ही को सापै मी, ब्यासजी रो घो ही कयाडो है कै घर-पोखण सो कोई पुन को हैनी।'

सेठाणी र घर रो बहु थोड़ो हु'र, मांस्यां में ऊतरग्यो घर मन री खुसी मानां रै रस्तै हुतो एकर सारी चेतना में फैलगो। छाछ नै मठोकसी एक बूढी सी लुगाई बोली, "म्हाराज मेव रा रूस है बापड़ा भज'र धाया है, घालां जद म्हे हो क्यों घालांनी कीन हीं, घणी हीं मनमें धावै पण घालां कांई काळजो का फोड़ा कीन हीं ? लप माटो अर चिवटी लूण मिर्च भोळ'र बकड़ो साग टुकड़ो कठा उठार लस्यां, मासीस देस्यां मानैं बतावो थे, मवार क्यारो साग करां दस पन्द्र तो कांई ठा ठाकुरजी कियो तो, फळी फूसी ई बापर सकै" —

डोकरी आपरी बात पुरी कर'र पूरणविराम ही को लगायोनी बीं सू पला ही ढोलण बोली, धिरियाणी, चोगुण भाय, किरोडां पर कलम चलावो लिछमी रो माय, छाछ कठ गांव मे घणखरै घरां तो बिलोवणा बसाएा ही छोड दिया अर कियां सू घा मेम दिया बारै नीचै गिलारी अर ऊंदरा लुकमीचणी खेल। छाछ का तो भोर का हुजारीमलजी रै दो नारळी फारू कमोय न मिल-बाकी तो राम राम है। मेव रा रूस है धनदाताओ बहम सुधार, पोखण न हीं मायोड़ा है-धरती पर। धिरियाणी मन हीं घालो थोडी, टुरडा मिन्नाऊ जा र, छोड री न्दा ही को बिचरोज मी, साऊ ही किया थान, पोरू रा मायाडा है।'

'तू की क्यो लाईनी ?"

"जाऊ सो धिरियाणी भी बडा भाग, म्हारा किसा हाथ घमीज थोड़ा धुळ, अठ ताई ही निठ भाई हूं टसक्ती टसकती। काल टींगर नै कस्यू पदडका मार टींगरा सागै लोट पाणी रो ही सुख को है नी मळ ? धावदी पूणो एक लोटो बीन ही। एक छोरी न को घालीनी, बा यठी रही।

'मा छोरी कौरी है किसोक मिजळी मरै, आग्यां म्हास'र ही बैठगो, क्यों तन छाछ साव टोघडिया न लोलो को भावनी, काल ही को लाईनी ?"

उणाम मूंढ छोरी बीन देखती रही अणबोल अर बेबस। खाली पारियै मांनी देख जद एक काळो छायां बीरै चेरै पर तिरै अर काळज मे एक भय। बीरी मांयली पीड़ नै कुण समझै मा मरगी नाते आपोड़ी मा रो जो हैं खातर मद पतीजो ?बयो है बण, 'छाछ ले'र नहीं आई वो रांडने घर में नी बडन दूं नी" बीं मा न हुमो काई ठा कै टबस लियां बिना सेठाणी रो अफसर छाछ रा दरसण ही को करण दनी। घरे मा मार गोबर फंडो राख, कद लावै खोलो बा। सेठाणी उठण लागी जद छोरी बोली, 'वाल हूं हीं ल देस्यू खोलो।"

सा देखी धूंड बोरा री, जळ मांगो" पावेक बोवण नाम्बगी पारियै में जोवती जोवती सेठाणी।

यो ही हाल हजारीमल जी रो है। बांरी बहू है बेला तेला अर अठाई घणा ही करलिया, भोजू करै तांवे धोवे जिसा, केई दफ भाईयो अर भाई परसगी जिमा दिया पण गरीब गुरबै न छाछ मिण'र घालसी। चौमासै में लीलो, बोरियां र दिनां में ढांवरां खातर लप वो लप ऊनरा बोरिया, सांगरी, करियां, फोगलो बीं हुवो हाप ऊचो किय रो बस पड़ता बीं न की लेव हो, भीर को नहीं तो बजार भाव सू पाव, अपघेर जाण रो मुलायजो तो अगले न राखणा ही पड।

हजारीमलजी री मा ही सोच है कै टाबरियां खातर पइसा सट्टू लीलो लियो जद पोसायो, रोही में बखरा घणां ही कभो है,म्हे तो कोई जावण सू रया। पावणां री नाएळो घालतां हाथ को पसीज नी वो अपले रा दो करळा कूटलो खावतां बिघा हाथ पसोज। टाबरियां रो हक म्हे अगला नै घाला,तो बदळै में टाबरियां नै ही दो निरावां तो खरा।" जनै ऊभै रामधन पंडित कह दियो, 'बात नै तो सठा बाव ही केणी परसी।"

'नहीं यो पगळै रो ही,काम निकळग्यो अर पावणां ही मुतळब सरग्यो।

' अर गांव में सोभा अर पुन री जड हरी।"

पीर पोथ्यां तो पुन हुवो ही, पोछो की वापड री धांतां ठर तो।"

बिना मा री वा छोरी, बठै सु पठै आई एक मुठ अर छाछ बण रस्त में ही पमोड़सी, मीठी लागी बीनै, जी में आई मळो ही चूर दे'र पेट में नाखदू पण डरती बा। चोखी लागी नहीं हुणी जा'र। पण पंद्रै मिट पग ही की गिनारी की बीनै। सेकर एक छोरै देखती बीनै, बो बोल्यो, 'दादीसा, सदा पाळी बा छेरा ऊभी है चोखी आवै।"

'अरे फीटी थळै वा, लियां बिना किसी सिरकसी, बारणा कण खोल दियो, नारळो एक घोंवण बाळ थाल मांगो।"

छोर पाव एक धोळो पाणी घालर बापडी नै काढदी, बोल्यो, "अबके आई ता कूट् लो।"

× × ×

साछ से'र दो एक लुगायां धनजी र घर सू निकळै ही, वान कोटवाळ रै बेट री बहू सामीं मिलगी। दातां र मिस्सी अर होठ लाल कियोडा। पगां में प्लास्टिक री राती चप्पलां। एक जणी बोली, 'डावडी छावडी तो कीं म्हान [illegible] पलाया कर, थारी चले।"

'थाले है किसी मालकण हू थठै री ?'

"म्हे तो सेठाणी ही समझी तन" कह र ब आग निकळगी। सेठाणी, पाछै पर बैठी बठी चाय पिये ही, का अपण आयगी, बोली "सेठाणीजी सा, महीनों हुग्यो एक रिपियो देवो अर एक कोई कोटडो बगसीस करो।'

सेठाणी आपरो मूं डो कीं फोर'र पूठ बीं कानी करली। इत में हीं धनजी री बहू आयगी निकळ'र बू टळ सू कम कांई हुवैली। बोली "दस दिन [illegible] को हुयानी कोट दियो हो पूरो महीनों बीस दिन ही परधोडो को हो नी, ईयां अठै कांई हीण है कपड़ां री ? रोटी एक देवां हीं हां रोजीना रिपियो न्यारो।"

"तो हूं और कठ ही जास्यूं लेवण नै, पेट तो म्हारो ही निकळनो चाईजै। आज पछ दो रिपिया लेस्यूं हूं रिपिय मैं को पोसावनी।"

'इया रिपिया आको र लाग है काई ?'

'घर मे रामजी पन्द्र जणां हो बैल बधो ठाकुरजी म्हाराज निबटो तो ये सगळा घर में हो पाच सात निबटता हा तो ही रिपियो घर पन्द्र निबटो तो ही बोही एक सूतको ? म्हार पोत न फाटयो पुराणो एक जाघियो दे दियो तो म्हे तो बीन जरो गो कर र मानां, बीं पर इतो किरियावर करो, पण परसू बाबू री नुई री नुई पट टोपडियो लायग्यो, बीरो किरियावर कीं पर कियो, दियोडो तो अमर हुव अर जिके में म्हारलो काम दूसरो कोई करल कांई ?"

'भो तो आप आपरो किसब है।"

इत्त न बींरो पोतो आयग्यो बारै, तेर बरसां रो बोल्यो, 'दादीसा लावो माडो देवो, ये कयो हो नी, मैं मरपोडा दो कबूतर उठाया हा नी बरामदै मे सू काल।"

"सावै रो सागै सू छाछो बाळन न मळै कठ सू आयग्यो," का उठो, एक कटोरदान समाळघो, दो तिलिया लाडू सकरांयत रा कियोडा, सात महीना पला रा ऊबरघा पडघा हा, सा'र दिया। छोरै एक दांता नीचै दे लियो घणो ही जोर लगायो नी फूटघोनी। बोल्यो, 'म कांई लाडू दिया है दादीसा ?"

"तो थार लातर मवार मढाहीं चढाळ, लाडुवां असा लाडू है, इसो तैं कांई होम कियो म्हारै, फोड स कोई भाठै सू।"

इत्त मैं बनजी आयग्यो, बोल्यो, "क्यों, कांई रोळो है नथियै री मा ?"

'म रदातजी पेट तो म्हार ही है, भरीज नही अद कणो सो कीं पड़े।"

'इत्तो बडो नाव है पर थारो पेट ही को भरीज नी, पेट है'क गोदाम है कांई ?"

बह नै कांई सिर पर ऊसणू ? सूखको सी पतळी थारै आठ दस घरां मैं राटयां मांय, एक टक तो ख़ार दोरो सोरो काढदां पण सिझ्या तो हांडी चढाणी ही पडे। मू थाई थान [illegible] ही है, माटोना रो बे एक मिरकसी तेल देवो एक साग ही सावळ को रमबोज नी। अबवै कीं थाय पाणी ही चाईज; मिच मसालो ही लाग म[illegible]डायो गडो मेडो ही बापर, सानी म्हारी बेळा इसी रपाणप क्यो करो— मिरची बचावो भगवान।"

डोकरी रो बेटो भळ आयग्यो, बोल्या, 'रोज रा एक गयो तो थारै पर गू ऐ वगीजै रिपिय मैं को पोसावैनी, रिपिया तीन देणा पडसी, ई सू तो जाट वगी'र दूसरा भाया कठेई कोई मिन्नो कुत्तो उठा लियो पर होळी दियाळी निवारो भेजतो, गळा बापडा म्हारो पाल।"

'मा दो पर बग तीन, सू टलो म्हान गुण दाई हुयो" सेठ कयो।

'ना धनदाताजी, सू टप सू टल री बवात मत काढोना, पछो दूनो मेवै रा कम हो दे, मै तो दिया सेरा, म्हारै सागै थन्नों नाम्हों सेखो करता थे फूठरा को लागोसी।'

"ठीक है, ठीक है, कामड़ो टैमोटम करता रैवो, एक रिपियो घोर देस्यां ।"

बे मा बेटो छेड़ै हुया, का पचायत रो कोटवाळ आयग्यो, "सेठ सा'ब, 'अवार रा अबार बुलावै आपने, थाणदारजी आया हैं ।"

"सेठ चमक्यो एकर, फेर कीं सभळ'र पूछयो, "क्यों आज इसी कांई बात है रे भोमा ?"

'पूरो तो ठा नहीं सा ! पण गुरबराट सूं कीं या ही भणक पड़ी क नसबन्दी रो ही कोई रोळो हुणो चाईज ।'

सेठ गयो, आग देख तो सिरपच, थाणदार पटवारी, गांवसेवक, दो एक गांव रा चलता पुरजा आन्मी और-अर सार्ग सेठ हजारीमल बठा [illegible] भेळा हुयोड़ा । अंरामजीं री कर'र, धनजी ही जा'र एक पासै बैठग्या ।

थाणदार कयो 'आवो सेठां सगळा [illegible] सुणो ये, नसबन्दी खातर बडी करड़ाई है, सरकारी मुलाजम न तो आंख दोठी ही को छोडैनी राज, [illegible] कितो ही सिफारसी हुवो, कण ही थोड़ी सी ही चू चप्पड़ [illegible] । इस में हीं धनजी ससपड़ तिणसा रोकदी अर घणी तीन पाच करी तो बोली "दस दिन ही को रिटायरमेंट-बोलो कोई कांई कर ? तैसीलदार नाजिरो को हो मी, ईयां अठ कांई कर-गांवां रा आदमी थाव बांन कब-एक कानी नसियो 'यारो ।"
पेसकार पटवारी सैं साग-कप र कन हीं कयेडी । रो [illegible] ही निकळनो चाईजै।
समझा बुझा'र लावो सोर्मा-म, नहीं तो जोर जबरदस्ती [illegible]
सुण हा चुपचाप अर देख हा टुकर टुकर थाणदार सामो [illegible]

थाणदार ही देख्यो एकर बार सामो की रोब सू, [illegible]
हां बात की असर कियो है । अवाज भठै निकळी भागी ही सुरां म्हाराज निबटो तो हैं अपसरां म्हान ठा नहीं कांई करो थार हलक सू डोढल के पद्र निबटो तो म हुणा ही चाईज नहीं हुया तो ना काबलियत तो है ही नोकरी यो दे दियो तो असर पड़ कोई कीं को कह सक्नी । पटवारी अर ग्रामसेवक जावो परसूं बाबू बजी, दस बजी अर बार बजी ताई दो दो आन्मी ये लावो-सा'र कियो, मिलसी बान जोप में आपां थळा र लेजास्यां, अर थळा'र ही कालोकाई ?"
बाड देस्यां । हां सेठां' दो दो आदमी ये कर'र दवो, 'थ्याज बिस्व करो'क नी ? थाणदार थोडो करड़ाई सू दोनू सेठा न पूछयो ।

"करां सा।'

"चार्जसेस हैं ?"

"नहीं सा।"

"तो सीधा ही आवोला हवालात में।"

दोनू ही देखण लागग्या थाणेदार सामो काळजो जाण्यां छोडण लागग्यो। थाणेदार बोल्यो, "तो पूरी मदत करो राज री, आसाम्यां नें पटाणो तो और ही स्होरो है, थारो काई केस है तो मनें बतावो।"

"सा पूरी कोसीस करस्यां।"

'पूरी अधूरी हू को समझू नी, पांच पचास गांठ सू देणा पड़ सा देवो, नहीं तो थे खुद ही फेट में आ सको।"

"म्हे अब, म्हारी तो ऊमर ही निकळ ," हजारीमल कयो। सेठ रो

है काई। पूरो ही को हुयोनी, बीं सू पलां ही थाणेदार बीन काट दियो, बोल्यो,

"नहीं राज र तो कोटो पूरा हुणों चाईजे, पर सिरैपथां थे ही

बड़ मैं काई सिर पड़ो हू जावतो लेखाऊ सो ही। कोई की पीडो देव तो

राटयो साथ, एक टक हो।

पड़। मू थाई पान ठा ठेकार री खोज में निकळग्या।

सावळ को एमबीज नी। पर मोल ही, केया सागे सिररव री नाराजगी ही, रढक

मन्नाताभो नहो मेर भोलो मळे कम पासी, जिता राजी व [illegible] विसो और कोई

निछनो बधावो भग

डोकरी ? बोल्यो, 'पनजी, आवजी, आपणे बूढ वारे कठ ही पीर करद

ग, ई अवीज, र्ति ओ है वा ता ?'

अवीनार दूसरा

निवारी नेदन", मुर" सागे कांधिया ही मळ करेई, किसी ही गोरमिंट हुवो

सो सदा सू ही लिवतो आयो है। लिछमी रा बेटा हा, लोंनी रा

'है।'

'तो थारोन अब किसो पवरो बठणों है ? हजारीमल हस'र कयो।

रा ह नहीं सो, अंधमग तो गुणो है, होम में ही को बठ सकेनी, जियो

बो रा, बना ही है गांव में।"

हजारीमल रै घर कन धरस बाईस तेईसेक रो छोरो वस साथा रो गू यो है—जीभ जलम ग ही को उपळीजनी बींरो पण काम करण में सैंठो है। द मजूरी जची तो करसी दो दिन नहीं तो च्यार दिन सामों हीं को जोयोनी गवाड विचाळ पींपळ रो गट्टो है, बीं पर धरमर खेलसी, का मिन्दर रै गुमारि में, पंडित रामधन रै सामो बठ'र चोपड़ री कोड्यां फेंकदी, समझ सगळी है एकलो ही है। आपर झूपडिय में दो टिक्कड सेक'र मस्त। माटियो करेई नींवा ग्यो तो, घरूडी मांग लाव। ममावस पुयू हजारीमल ही पाव डेढ पाव आट सीधो घालदै। सेठ देख्यो मूरख नें माथोसाई, भो फायदो तो आपां हीं उठावो एक तो बींने धर एक आपरी आसामी—बरस चाळीसेक र एक कोटवाळ नैं'रया कर दिया। 'ब्याज बिसवो कीं कयळो कर देस्यू, मही मे आटो काढ देस्यू' इत्तं कैयां पछै गरीब आसामी री मस बाढै तो ही एकर तो को बोलैनी।

धनजी ईं न बीन मांस नसारी—रामद्वार में बरस साठक रो एक साध है साव भोळो घर सूधो। गोरी कया ही ठीक घर काळी क्यां हीं आधो भगवो घर आधो धोळो। सेठ सोच्यो ओ ठीक है नी, न कींरै ही घर कजड घर न कोई बीनणी बिराजी हुव भी बिना। होळै स फीचा में देवा तो आपणी गिर टळै। बोल्यो, 'पधारो स'ता आज सिझ्या थोडो बीप में था र घाणों है, काल मोर मैं थानें, डागधर दो मिट देखसी, फेर हाथो हाथ ही थांन मोटर मठै उतार दे'सी'।'

"रामजी राम आप जाणो देस ही तो जाणो पड ही, आप हू कियो छानो है?"

इयां ही बरस पताळीसेक रै एक नायक न धीर चकरी चढान्यो। दोनू हीं बरी हुया। भोड संदेहै मीच कद माथ, मजो भो क दोनां रो ही टक्रो लाग्यो र पइसो, बाफण बेटा देयक लेव, पण?



टको सू आथूणो पावडा पचासेक दापां दरोधी रो घर है—एक जूनी साळ घर एक कुच्योडो सो झूपडो, घर रो मडाण बस इत्तो ही। झूपड मे थूणी दे राखी है, बींन हीं आट राखी है उदीवळां। साळ म दियोर धणी ही किरम्यां जाम्यां छोड पड ही'यी। बां पर दियोर

पुराणा चट एज र सतम हुया । कदे कणास वा मामू इक्का दुक्का कावरा पड़ता रव । मुळो फड़पा अर किरम्या र बजका सू छणुना माटो साळ र प्रांगणु पर पीळ पावडर री टीक्या माड़दे । च्यार सतीर है दा बिड़क्योड़ा अर दो की सलसर । पचास साल पुराणो ई साळ न, सहन्याद है दीपा न, मोजू को किणण दीनी । पाणा रो पारियो अर गार रो फूडो, चेत उतरण ही को दनी, पण मर्द खुद ही दो पग ग्रास निकळगो साळ सू, डोल ही पूरो का समनी ।

माधी साळ में लादेक फूठर गालो रास-मटफांसड में गाय न नांलणु, अर माधी में मायरो बेमा-छोडो-गूण्ड माचा, टण री एक पेवटी अर एक तणो पर दो तीन छेलला, कामळ अर माचला को इलो सो पसक्र । फूपड़ में चूल्हो वाली हांडी, पारिया अर एक छलेडो पर छाणा बळीतो, नीच बीरै, माटो घूटो अर ग तीन कुलडिया में लूण मिच ।

जिला मायराम—जित्ता हा जीव घर में, मा बेटो । डोकरी पचठ रै पाम पाधे है अर छोरो वरस छाईस सत्ताईस रो नांव तोळ है । दो टाबर मीर [illegible] पर्ला' एक पान साम'र पूरो हुयो, एकन पाणीभरै उठालियो । तोळ भग रो की मोळो पड़, पण मुळायो काम मज री करै । सरीर रा चलतो मोटियार, पाणी रा घड़ा लाव अर खेत मळ रो सगळो काम कर । मबार कीरै ही बडसियो जाव, का मजूरी रा सात माठ रिपिया ले'र घर में बड । डोकरी री सोभी काम चलाड है, हाथ एक थोडो धूज ।

मावण में धैसक मेह हुयो जद, साळ चोई दो जाग्या सू अर झूपडो झरपो घणों गळघोडो हो बठ सू । माळ में बोरो एक फचरो भीजग्यो, पींपिया बबण लागग्या जद काढ'र बार नांख्यो । हणो परसा पुर धासोगार हुग्या, धान सुकोया देहा में कीलो एक सिरमट पाई-धनजी र मठ सू को रिपिय कीलो । झूपडो दया ही रयो-माप बात चोमास पछ । अब माम पर मळे मोह है बान्ळी री । डोकरा बोली तोळ, फाटक'र पडी बिरखा तो, बटा, मिर ही कठ लुकोवांला, छाबो ले बठसी गणगौर नै, दगळिया छेह जा पड़सी, आपणे सू मळे, जळनी सी मरा ही को टूवनी, तू फूडा रो एक सळाई माळो गुरड ला, अर हूं दर्त गारें सू मौडो दहलू, मेह अर मोत रो काई भरोसो लाडेसर, कद आ पड ।" बो बोल्यो, 'मा, कोई बळद गाडियो मांग'र पाच-सात फूडा साथ हा । नास लाऊ, लेठो मिर केई दिनां रो ।"

"हाँ, यो तो और ही आछो बेगा ।"

वो मुरड नै टुग्यो आ थारो घाल'र बठगी बीडी दहन न । कूद नै एक कोर पर ठँरा रास्तो हा कांपतै हाथ सू गोबर रो लोयो काढं ही का कूडो पड्यो नीचे खळीळ बाज्यो, भली हुई माप को पड़ौनी, खडको सुण'र पाडोसण आयगी डोकरी न बीडो पर बठी देख'र बोली 'बूढ बारै कुनाव करस्यो काई छेडा हुयो, हूं दडदू हेलो मार लेमो हो मन ।'

"थाल करसी बीनणी, थारी बेल बघली किया ठाकुरजी, थार ही आसर पडी हू ।"

"आसरो ठाकुरजी रो है, पण अबै तो दादी, दो महीना रो फोडो और समझो देवठणी न तो आई बीनणी ?"

"भूमो थारां पतीजै बीनणी, थारो मू वो घी सक्कर सू भराऊ, बो दिन ही कदे ही देखू ।"

"पणियो तो चढा दियोनी ?"

"दादी रो एक बोरियो अर पर्या में पायलडी है सू तका सो, और काई गणो हुवै बीनणी, जो हो निठ तावै आयो है ।"

'कीं रीत भांत लेबसो सगो ?"

"हजार आठ स तो लेसी ही बीनणी, लेवो लिरावो, कीं "हूं कियो अर कीं गाय गोली बेच बट'र एकर नाको तो किया ही नि

"सुणी है दानै छोरी मे कीं कसर है ?" (चढ़ादियो । दोनू

"कसर बीनणी घर घराण में तो आज ताई ही क(ही टप।ो लाग्यो छोनो है, छोरी री एक आंख में छाह है मोळमान । घरे आय सफा ही फूंट ज्यावै तो, बो मौनै पुकार कर लियो दोलडै हाथ अर ☐ ☐ है । हू तो बहू जे वा साणै थोडी खोडी हुय तो ही राजी हूं, घोगए फिरता नै तो रेसू कठै ही, सासी आपणो घर्णो ही अडोळो आगै पण जोर काई ? अब लाडेसर, न तो गारो पोवर ही हुय, अर न आवडी ही सावळ निचोईज । घणो में काई है, टुकड़ो ही सावळ को सिकनी, यो देख तु पूच कन, सोच पर रोटी उथळती बेळा परडको चेपलियो ।"

'भो, सासो बाळ लियो, फालो ऊपडग्यो, तेल रो आपळो लगाई हुवो वीं बेळा कीं ध्यान राख्या करो ।"

"भार रो नेल ही को घळ' हानी, तो ही कूलडिय में पडघ चीटै रो चिकणाई लगाया थी फेर ही ऊरड हो गयो ही। कूपडियो तो, मतो को ही नीं तो ही छवायो काल कीं, चानणों दीख हो माऊर, मेह आळ दिन बेवणी तांई धायस्यो पाणी, छमक रात को सोईतो, पाणी उळीच्यो, ठापरियो कीं सलसर हरलू तो चोमासो बदाय की स्योरो निवळ, पद्ध तो छेरड कुंई कवाडियो उतराणों ही पडसी, बहू, ई टम में मवार मीतळी हो सडो को-हूवैनी, मुवीं पामरो करणों म्हारै तो मायर मू भागीरथी छवाणी है।'

पाडोसण बींडो दह ही, डोकरी आमणे में ऊभी ही, बा दर्स में ही हीरो नायक आयो बोल्यो, "दादो काल माळा पइसा झूपडो छवाई रा ?"

"बेटा एक दो दिन ठर तो, माईनाळी करै, पीरू नोळियो आपरी दैनको लासी, हू बिना बतळाए ही पुगाळ घरे।"

"पीरू कीनि, मन माज घाईज सिझ्या तांई, मैं पैसा हो कहदियो होनी सन की पइसा देणा पडला काल, घर स हा भरी ही।"

"भरी ही भाई, किसी कूड बोलू हू, नहीं ठरसी तो सासू कठै सू ही, पण इसा मवार कोई कुडको आयगो थारै ?'

'कोई सगो सम्बन्धी आयोडो है, सिझ्या की गुटकियो बाने देणों चाळनो "

का मजूर।"

चलाउ है हाथगाळनजोगा घी सामग्री कर'र खुवावनी, वीं मृत में काईं काढस्यो, रे हुस्यो कठ ही ?"

गाथम

भरद्यो घणों गढ हुवो सामै, आप्यांमूर में ही करणा पड़े, आदमी और कमावै क्या

बयण लागग्या'

सुकोया, बेटा ! भो पीपरा नै ही कमाव, काढ रांड दाणै रो नोव, हू तो ला'र

[illegible] नै जोर करस्यू, घडी दो एक न आए तू।"

बो गयो घर गई पाडोसण ही। डोकरी झूपड में गई। छेरैडो नीच गळनो वघो एक तपेली हो डाळ मील री। घो हो वीं में। निचो निचा, मट्टोतै भर म बैठो कियो हुयो। थोडी सी कांकरो सू तोळ'री रोटी रो पापड भास देंवती, मिन्ना बीरै छोवड में की सुगन्ध कर देंवती, आप बापडो नै तो घी हो ही कठ, "बका पूत भोजन नहीं करणा" ई खातर छकेन'री साळ कीं बा ही नाम लेंवती, आपरी बेटा।

गळनो छेड़ो किया, पीळो केसर, लीलो रो घो । सोचै हो, 'आज हड़मानजी रै सीर पर ही दो टापा को नांख्यानी, छछेड़ रो लाळ नांसी, खीरो धड़ धड़ करै हो, दो टोपां में किसो मुनाफो कर हो केस खोस्या किसो मुंगो हळको हुव हो, अब सगळो वेचणो पड़सी, कुण दे'सी पूरा पइसा मनै पण धाय चिबटी ही को रहोनी, बी बिना तो दिनूग खोटो उठांवण रो सरधा ही को हुवेनी । सु घणा आळी तमाखु ही कठै, फेर उठ'र चाड़िया देख्यो गुड़ रो दो किरची पड़ी है, आन डोढ़ाल भर निठ हुवलो, मिरचा रा फोलरा लाळ-जादा नहीं तो पाव खड़ तो-एक कीलो खांड तो लाणो ही पड़सी-तेल तो अबार बिक गई दिन इयां ही राबड़ी कड़ी सू काम निकळै । पण इयां किता दिन बिकसी एक दो दिन धिकया ही किसी पार पड़ी, हीरियो तो अबार आयो र'सी दो घड़ी नै ।" बण एक पूर में ई कूणी सी कर'र तपैली सिर पर ऊचली झूपड़ो बन्द कर र टुरगी । मास्टर रामजस मिलग्यो टकी र आगल पास । पूछ्यो, "काई ऊचलियो तपैली मे, माजा ?"

'चोपड़ है माठरजी ।"

बेचण जावो ?"

'हा ।"

दिखावो", डोकरी अधर स तपैसी उतारी, गळनो खोल्यो मास्टर घी देख्यो, घी अधेर में हीं खांमो को रवनी, सुगन्ध ही कह दियो, तो ही बण थोड़ो सी आंगळी डुबो'र नाक मे दियो । बोल्यो "मनै लेणो है माजी, भाव करद्यो ।"

"माठरजी, मन काई ठा ये रात दिन लेबो जिका जाणो ।"

"तेईस रिपिया देस्यूं माजी कीलै पर, पण रिपिया दस तो ये अबार लेवो, नगद, बाकी तीन दिन ठैरणो पड़सी, तिणखा आई भर दियानी ।"

माठरजी भाव री तो कोंनी, पइसा तो मनै हाथोहाथ ही देणा पड़ ।

"तो जावो माजी,' अर बा फेर टुर पड़ी, धनजी री दूकान कांनी ।

होळ होळे चालती, बा सेठ र बरामदै में जा'र बैठगी । पांच सात मिट बाद धनजी आप ही आयो बरामदै कांनी । डोकरी नै देख'र बोल्यो 'बोलो माजी, कियां पधारणो हुयो ?"

चोपड़ है, कीलो डोढ़क ।"

"ताजो है ?"

'एकदम महीन बोम दिना रो, घर री गाय रो।"

'मठमेळ तो को है नी ?

"म्रोजू तो सार किया व ही को नौवडघानी सेठां, श्रबै कितीक रात कितीक मांभरको, नु वे सिर सू मळे पोळाऊ, चेतो गाव गयोडो है।'

"नहीं है सेळमेळ तो श्राछी वात है सुख पास्यो साथा दिखावो देखां ?'

छोकरी छेडो नियो गळनो, सेठ दा श्रांगळी आछी सी मर'र सट बाकै में घातली, श्रौ हाथ र ऊपरल पासैं लगा'र थोडो मसळ'र सु घ्यो।

"ठीक ही दीस थी तो, दाम बोलो ?"

"दीस री या रो काई लेणो दणो है सेठा, चूरमो कर'र जीमलो, काळजो पुळे तो दुममो में हुव का म्हार मे किया, दाम हूं काई बताऊ रात दिन लेवो देवा पे।"

'पट्टार रिपिया है।"

'श्रौ तो सावळ फुरमावो घरे भाय रो ही दोस हूं काई ? सहर में तो तेईस चौईस रा भाव बताव।"

"तो भाजी सहर ही लेजावो, मठ रा पोडा [illegible] क्यो देख्या ?"

"हू हीं तो सहर जावती तो मठ कीरपा मारती क्यों श्रावती, थारी पान ही काईं ठा किया नही ली है, म्हारो ही जी जाणे।"

"सहर में मात्री केई चु ळी, केई टैक्स, श्रावण जावण रा भाडा तोडा, ता रगडा है, म्हार तो है मैं रिपियो श्राठाना मजूरी हुवै तो हुव, नहीं तो सुवो पूरा ही सही, घणो है, श्रौ श्राहको सारे ही चालणो पड़।"

"देमसो, दाम तो कम है सेठां।"

'लैर देख लस्यां, गिरधारी ?"

"हां सा ?"

'स श्रो ठोव लेजा माजी रो, मालो कर'र भला श्रमलां नै।"

मोटी ताळ न बस मा र कयो, "छोड पीलो दस ग्राम है।'

'दो ग्राम हुया तोलो ओलो करत न लनै, दस ग्राम रो कोई हिसाव हुवै पी न, काईं पींपळामोळ है मा ? बीस तीस ग्राम तो ई में घाव ही हुवैलो घ्यान राखणा चाईज, बोवार बोवार र तरीक सू करणो।"

डोकरा, घर सिनाथ रै काघ पर हाथ दियां सूरदास, मूंडा तिरछा कर उदास बस रै ग्रह्न कानी बगैं [illegible] । काळजै असन्तोष घर होंठां पर लटाई घ ग्रह्न पर धा र गैठग्या । बस हुवगा में भोजू एक घटा बाकी हो ।

डोकरी थेलियो खोल'र एक न्यातण में बध्योडा दो पीडिया काढ्या, तीना दो गुटका पाणी भाव जिसो ग्राघार कर लियो । सामन पी हो, एक बूटी बाज डोकरो पाणी पाव हो । नीचल होठ नीचै खासो सारो बरदो दे राख्यो हो। कोई दो पाव पइसा देव बींन ठडो पाणी कोरी मटकी सू पावै घर पाव ही डग सू नहीं जिकी न एक मोटा बाळटी भरी भीं मा सू , पाणी हो की गिदळपोरो गरम घर देस्वादो । सूरदाम बूक मांडी, डाकरै ग्ररड दे सो लोटो ऊधा दियो एक गुटको गेईज्यो हुसी, बाकी पाणी बूक ऊपर कर नीच सगळा पूर भीजग्या । मूरदास र कठै लटाव, 'हू तो मांघो हू, म्हार दाई हीं तू है काई ?"

क्या बोलियो मू ड सू पोणी पीणो है तो पी, नहीं तो ग्रो पडियो रस्तो नाप इठै सू , रग जमाव है क्या म्होर माथ ?'

सिनाथ बोल्यो "ग्रो तो ठीक ही बोल्यो है तू ग्रठ पाणी पावण बठो है का मसो उगावण न ? फेरी ल घर ग्याळां पछ दिन भर में ग्राघी बाळटी तो लाळा पाव लोगा नै, ग्रर करडावण में पाती ही को दैंनी ।'

'म्है इय में क्या कैयो इत्तो गरम हुण री क्या जरूत है ?"

स तो पुर भिजो दिया, मास्यां में पाणी चढग्यो, पळसूट सू ग्रांख्या ग्राल री बारै ग्राव घर कठ ग्राजू सूका ही पडग्या है ग्रीर तू कांई डांग माड हो ?"

डोकरी लडो ही कर्नं हीं, बोली, "तू ग्रठै तैसीलदार लाग्योडो है का पाणी पावण न ? लर लर करतो घणो हीं, है तो इसो ई थेळी में डुबो डुबो'र काढू दो तीन दफ भेड न काढ ज्यू हणै थारी माग जावै कठै ही दाडो बळविग रो सी, पळती म ठा को देखनी, घोरका ग्रीर करै ।"

करण हो कयो, जीवण दो जीवण दो माजी म्हाराज मोळो है ग्राग साफ ध्यान राख्या करो ग्र्याराजी ।"

'मोळो है तो थेळी में तो का पियनी, पाच पइसा कोई देव तो 'हां बाबूसा, ग्रबार लायो ठडो टोप जळ, फट लोटो हाथ मे देवतो ही हुव, ग्रबार लौरी में बठी एक सेठाणी न करवो ले'र पा'र ग्रायो है म्हाराज रो मू [illegible] नियो ग्रागीनैं सू , म्हाराजा रो डोळ हुतो तो देस न देवण देवता को ग्रांवता नी ?"

ई थोडी गरमागरमी रो फळ ओ हुयो क डोकरो अर सिनाथ न पाणी ठंडो ही नहीं, हाथ में लोटो और दे दियो—पाणी स्योरो पीवण न। सामनै री एक भींत पर सिनाथ एक ओळी बांच हो, 'अनुशासन ही देश को महान बनाता है', फेर आग 'यहां कोई पेशाब न करें' पण लोगां मूत-मूत बीं भींत रो सत्यानास कर राख्यो हो अर ठौर स्यार स्यार बेशुमार टट्टी प्यारी। भींत सू पांच सात पांवडा परियां पसावघर हो, किवाडियो कोई लेयग्यो दीस हो, परियां सूं हीं बोरी दुरगन्ध आव ही-माथो ऊंचो चढ जिसो। सिनाथ सोचें हो, "इयां भींतां, पाखाना अर पसावघरा पर लिख्या अनुशासन रैयां कर—लोगां अनुशासन रैं आसरो साई धार दे राखी है। फेर बीन ध्यान आयो हजारीमल रो दुकान में टम्योडा मौकार धनजी र बरामद में लिख्योडा दोहा, चौपाई, अर प्यार सुत्र सगळा जीवण सू कोसां दूर दिखाऊ अर जड भींतां रो कुठराणी-झूठो प्रचार; ई पर सरकार अर समाज जींवता हुसी ? इयां जे सरकार जियै तो वींनैं मरण हा कुण द, पण तो ही टीह बीन हीं है।" विचारां में खोयोडो, बो थोडा और आग निकळग्यो।

बण देख्यो, गाडआळो एक जवान छोरो, गांव र कोई बूढै गाहक साग बोल हो। गाहक कयो, "आ आठानी खोटी है बाबू सा'ब, दोना चानी एकसी, ओक ही को दीसनी, अबार थोडी सी ताळ पैलां टू मुजिया सें'र गयो आप सू, बन्नळी बाबू।

गाडआळो बोल्यो, 'बाबा कान में घालल ईं नै, तेडू को 'रहनी कान में।'

'अरे बीरा पी सांई हीं तो जा'र आयो हू, कमाळो लें'र ग्याल, म्हारै कन दूजी कोई हुव तो आठानी।"

"कह दियो आयो मत ना," हाथ सूं खेंवतो बो धक्को दें'र डोकरे नैं बण आगो कर दियो "बातें आगीनै, बिगाए कठै हो नावें भटीजसी।"

डोकरो बोल्यो "बाबू, इन्याव है ओ तो, भोजू तो मुजिया म्हारै हाथ में [illegible] पड्या है।"

"बताऊ कांई आयो घणों हीं साहूकार ?"

गाड र एक फाटक पर लिख्योडो हो, 'युवक कांग्रेस जिन्दाबाद' 'युवा नेता है हृदय सम्राट', हयां [illegible] केई नारा अर केई नाव और। गाडआळ री छीपरी चेतना पर जरूर कोई गळतफमी तिरै हो अर परे पर एक झुठो थई। धाम राम सब ओर गाडआळो सू ओ आपणो आपनै कीं प्यारो सो समझतो आयो सिनाथ नैं गरीब डोकरो बळ ई कन को आयो नो। दुरायो, एरर न्ने टर्के ई कांनी मुड मुड

मादम्यां री मोडी है, भगवान री नहीं आपां ई न हीं तो कीं बदळनो चावां।'

"समझग्या बाबा, जय हुवो थारी ।"

"तो थवे जावो थे, खेत जावण नै मोडो हुय थार ।"

सगळा ही टुरग्या, निवळता चर्चा करै हा, 'भल आपणी, थारो अ घाटो आपणो भलै भूखा क्यों, सूरदास री बात फिटोफिट है।"

□ □

अस्पताळ में भरत माय, कुळवै ढोल अर अधचेत भे जियो। पूग्या, एक डागधर धीरजी नै पूछयो, "भां दो रां नसबन्दी करा राखी है क नहीं, भा बतावो पला ?"

धीरजी कयो, "नहीं सा।"

'तो पला भा लिख'र देवो कै, म्हे नसब दी कराणो चावां, इलाज रं बात पछ्‌ करसा।

"वीरो ही मोड झर तो भरो, सास निकळै तो निकळो, पैलां थारं बात पूरी हुणी चाईजे मजबूरी में तो इयां कीं हैकरा सको डागधरसा'ब, गर न बाप बणा'र ऊचास्यो तो ही ऊचस्या पण ये थारी टेक मत छोड्या-रं कैस्यो बीन हीं खेस्या पावडा म्हे तो।'

'काई बताऊ ठाकरसा देस में बवार हुवा ही इसी है, थार सू किसी छानी है।'

"बीन सू च ल है था हवा कीं तो मन हीं समझावो ?"

'ठेठ चोटी सू ।"

'चालणगे सा टम है पण बाहू आम हुवा रो रूख एक सो को रयो करै है नी कदेई दिस फुरगी अद ?'

डागधर बडो मलो, सुघो अर बवारकुसळ लाग्यो, छोळ स बोल्यो, 'जरूरी है फुरसी बा तो अर राम कियो तो चोटी रा रूवटा ही उडसी पण म्हे तो ठाकरां सासु आगली बहू हा भोदायो काम करां, मोडो दियां घठ ठ रा किता घडो राज है बीरो भाज है।"

मनजी बोल्यो, 'अबार तो थारै दो महीना रा दांणा है जित तो आभो थांन टोपसी सो लाग, पण दिल्ली ओजू दूर है चौमासो भळगो है भलो। तेड़ो भेज'र बुलावां तो ही सिर हिलावो, इसा थे कांई प्रधानमंत्री रा बेटा हो ? काल तांई छाछ राबड़ी पा पा'र टाबरा दांई पाळया आज जबाब देवें, सेठ कांई पूछ बाढसी म्हारो, कमाई म्हारी कर'र खावां, पूछ तो रामजी ही को राख्योनी, हूं कांई बाढू ?"

रामधन बोल्यो, "अबार जमानों हीं भलाई रो को रयोनी सेठां।"

नत्थू बोल्यो, "ऐ सेठां, चौमासो भळण री फरमाई, पण लेठा तो खित्त में भीर घणा हीं है नी-छोरै छोरी रा फेरा किनारै आयोड़ा डण डोकरी, माएरो मसाणे नगा' पाणी, ताती मा'गी अर आसू रो कूप मारी। ये लिछमी रा पुत्र हो थां बिना बस्ती मे पार पड़ै कदेई ?"

रामधन बोल्यो, "चौधरी, पाप रो बाप, लेनां री रकम तो ओजू बाकी ही पड़ी है ?'

बातां सूं तो सुरतिय रो मन आ इसो घायल कर दियो क भी आगै साहू आख में चाल्यो ही नहीं रडक। बो हाथ जाड'र बोल्यो, "माईता हूं लम्बी चौडी को जाणूं नीं, हूं तो म्हार जी री साखीं भरूं, हू तो आज तांई न तो थारै सूं बदळ्यो अर न आगै बदळूं म्हारा ग्रांटा तो थानें किया ही काढणो पडसी।"

सेठ पूछ्यो, "माव कांई है, आ तो सुणा ?"

बुगचड़ी खोल'र बोल्यो, "अे तो हूम है म्हार कने चांदी री इग्याराना तीनपाव अर बोरी दो-तीन है मोठ।"

"अर रिपिया ?'

"रिपिया हजार आठस में तो पाणी ही को पडनी।"

"फेर तो मुस्कल है पार पड़नी आस कचरो कठ गयो ?'

"पड्यो है पाच-सात गाडी।"

बींरो कांई करसो यार किसो चोखों है ?"

'नाख लेयूं मसीन पर।"

रामधन बोल्यो 'सेठां पुरखो अबार आ'र गयो ही हो, परषू जान चढसी छोर री, अर थो बापड़ो आयो ही है, चौरै सुरतै सै आ बूवसी, गांव में बससी बींन तो की न की रस्तै ई देवळो नै तो थोकणो पडसी।"

नत्थू बोल्यो, "सेठां, ई छोरै पर तो, मर करो की, म्हार कँण सू हीं गौरी दाई पाचा को पहेनी म्हो।"

टूम सेठ माय मेलदी, इत्तै में कैसरो कोटवाळ भा पूग्यो बोल्यो, "दो टूक पाया है पाळो भरण नै।"

नत्थू बोल्यो, "थे तो न्याल हुग्या सेठां, पाळो करडो ऊगो थयो बीस बाईस रो भाव है सहर में, हजारीमलजी ही पइसा चोखा कूट लिया थस।"

'कीं दाळ रोटी वाळा पइसडा हुसी ही भैसतो, आवतै री भोवतै दीससी, पैम जिसा भावार कम ही लाए, सुरतिया चाल देखां थायै भाड मीं स्हारो ठो लगा। चालो," भर स ही टुर बहीर हुग्या।

सेठ सोचै हो, "भाव रा दो-च्यार सनकी बासण जचार'र खडा करण में लाग्योडा है, पण बोन भा ठा क्यांने है कै नीचलो एक ही बासण मिरका दियो कण हीं तो सै भाडा छिडे जा पड़सी, लौकी रा साव मारत हैं, थे किसो किसो समझसी।"

सूरज छिपग्यो, बत्ती हुगी। टूक भरीज्या जिरो सुरतियो पाळै री चोसगी पला बोकरयो। मू भर माथो लंस सू भरीजग्या, भोळखणी में ही को भावै हो नी। हाथ भर पगां में कांटा खुमग्या हा। टूक भरीजे पछ बोल्यो—

"भब जाऊ सेठां ?"

'हां जा, काल मोठां री भोरी तीन लँबडो भाए, घास न हु गाडचा भेजू हूं।"

"भेज देया।"

"तो जा" भर सेठ बत्ती रै चानणै नोट गिणन में लागग्यो।

